राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

★

– ग्रन्थाङ्क १९ –

शब्दरत्नप्रदीपः

★

— प्रकाशक —

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute; Jaipur.)

जयपुर (राजस्थान)

वि० सं० २०१३] प्रति ७५० [मूल्य रू० २)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

★

– ग्रन्थाङ्क १९ –

शब्दरत्नप्रदीपः

★

— प्रकाशक –

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute; Jaipur.)

जयपुर (राजस्थान)

वि० सं० २०१३] प्रति ७५० [मूल्य रू० २) ६०

RĀJASTHĀNA PURĀTANA GRANTHAMĀLĀ

Published by the Government of Rajasthan

A Series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁśa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular.

★

General Editor

Acharya JINA VIJAYA MUNI, Puratattvacharya,

Honorary Director, Rajasthan Oriental Research Institute,

Honorary Member of the German Oriental Society; Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona; and Gujarat Sahitya Sabha, Ahmedabad.

No. 19

ŚABDARATNAPRADĪPA

Edited by

Prof. Dr. HARIPRASAD SHASTRI

M. A., Ph. D. (Bombay),

(Asstt. Director, B. J. Institute of Learning and Research, Gujarat Vidya Sabha, Ahmedabad.)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE

JAIPUR

1956

शब्दरत्नप्रदीपः

★

सम्पादक

प्राध्यापक डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री, एम्. ए., पीएच्. डी. (बंबई),

(उपाध्यक्ष, भो. जे. अध्ययन-संशोधन विद्याभवन,

गुजरात विद्यासभा, अहमदाबाद)

★

—: प्रकाशक :—

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

संचालक-राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(.Rajasthan Oriental Research Institute; Jaipur.)

जयपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१३] प्रथमावृत्ति ★ मूल्य रू० [खिस्ताब्द १९५६

प्रकाशक -
संचालक - राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर, के आदेशानुसार - गोपालनारायण बहुरा।
मुद्रक -
जयन्ति दलाल, वसंत प्रिंटिंग प्रेस, घीकांटा रोड, अहमदाबाद

प्रधान संपादकीय वक्तव्य

★

सन् १९४२ के दिसंबरसे ४३ के अप्रेल तकके ५ महिने जैसलमेरके सुप्रसिद्ध प्राचीन जैन ज्ञानभंडारोंका विशेषरूपसे अवलोकन करनेका हमें सुअवसर मिला। हमारे साथ गुजरात विद्यासभाके प्राचीन साहित्य भण्डारके भाण्डागारिक (क्यूरेटर) और गुजराती साहित्यके मर्मज्ञ विद्वान् एवं विवेचक-लेखक, अध्यापकवर श्रीकेशवरामजी का. शास्त्री तथा प्राकृतसाहित्यके मर्मज्ञ पण्डित श्रीयुत अमृतलाल मोहनलाल भोजक, एवं प्राचीन ताडपत्रीय ग्रन्थ-लिपिके प्रमाणभूत प्रतिलिपिकर्ता श्रीयुत चिमनलाल भोजक, रसिकलाल भोजक, पं. शान्तिलाल शेठ तथा नागोरनिवासी मूलचंद व्यास, जयगोपाल व्यास, मेघराज व्यास आदि विद्वान् और सुयोग्य लेखकगणका अच्छा समूह था। उन पांच महिनोंमें हमने उक्त ग्रन्थभण्डारोमेंसे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी, गुजराती, हिन्दी, व्रज आदि भाषाओमें रचे हुए छोटे-बडे सैंकडों ही अप्रसिद्ध-अज्ञात-अप्राप्य ग्रन्थोंकी प्रतिलिपियां करवाई। इनमेंसे कई ग्रन्थोंका तो हमने अपनी 'सिंघी जैन ग्रन्थमाला' द्वारा प्रकाशन करना निश्चित किया, जिसके फलस्वरूप इतः पूर्व कई ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं और कई अभी प्रेसोंमें छप रहे हैं।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके १९ वें पुष्पके रूपमें, 'शब्दरत्नप्रदीप' नामक प्रस्तुत ग्रन्थ विद्वानोंके करकमलोंमें उपस्थित है यह भी उसी जैसलमेरके ज्ञानभण्डारमेंसे प्राप्त हुआ था।

उस ज्ञानभण्डारमें सुरक्षित दो-तीन प्राचीन प्रतियोंपरसे इस ग्रन्थकी प्रतिलिपिका काम विद्वद्वर्य्य श्री के. का. शास्त्रीने किया था। इसकी उक्त प्रतिलिपि गुजरात विद्यासभाके संग्रहमें रखी गई है। हमारा लक्ष्य तभीसे इस ग्रन्थको प्रकाशमें लानेका रहा था।

सन् १९५० में राजस्थान सरकार द्वारा, हमारे तत्त्वावधानमें, राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरकी स्थापना होने पर, हमने इस सस्था द्वारा राजस्थानकी साहित्यिक समृद्धिको प्रकाशमें लानेके हेतु 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला'के प्रकाशनका विस्तृत आयोजन किया। जैसलमेर एवं राजस्थानके अन्यान्य अनेक स्थानोंमें ऐसे सैंकडों ही ग्रन्थ छिपे पड़े हैं जो अभी प्रायः अज्ञात एवं अप्रकाशित हैं। यथाशक्य और यथासाधन इन ग्रन्थोंको प्रकाशमें लानेका हमारा सर्व प्रधान उद्देश्य रहा है और तदनुसार प्रस्तुत ग्रन्थमालामें अनेकानेक ग्रन्थ प्रकट करनेका प्रयत्न किया जा रहा है। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि प्रस्तुत ग्रन्थ भी उसी प्रयत्नका एक फल है।

इस ग्रन्थके विषयमें आवश्यक परिचय आदि ज्ञातव्य बातोंका उल्लेख, संपादनकर्ता डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री, एम्. ए., पीएच. डी. (आसिस्टेंट डायरेक्टर,

भोलाभाई जेसिंगभाई अध्ययन संशोधन विद्याभवन, गुजरात विद्यासभा, अहमदाबाद) ने, अपने इंग्रेजी उपोद्घात(इन्ट्रोडक्शन)में यथेष्ट रूपमें किया है जिससे जिज्ञासु पाठकोंको ग्रन्थगत विषयका विशिष्ट स्वरूप ज्ञात हो सकेगा।

ग्रन्थके स्थूल अवलोकनसे सामान्य जनको भी ज्ञात हो जायगा कि प्रस्तुत ग्रन्थ संस्कृत भाषाका एक संक्षिप्त शब्दकोष स्वरूप है। संस्कृत भाषाका शब्दभण्डार अगाध है। इस भण्डारका दिग्दर्शन एवं परिज्ञान करानेके लिये प्राचीन कालसे अनेक विद्वान्, अनेक प्रकारके शब्दकोषोंकी रचना करते आये हैं और अब भी यह कार्य सतत ही चल रहा है। प्राचीन कालमें, अमर, विश्व, वैजयन्ती, मेदिनी, धनंजय, अभिधानचिन्तामणि आदि अनेक शब्दकोष बने और आधुनिक कालमें शब्दकल्पद्रुम, वाचस्पत्यबृहदभिधान, शब्दस्तोम-महानिधि, शब्दचिन्तामणि आदि अनेक बृहदाकार शब्दकोष बने हैं। तदुपरान्त विल्सन, मोनियर विलियम्स, मेकडोनाल्ड आदि पश्चिमीय विद्वानोंने भी संस्कृत-इंग्रेजी के अनेक शब्दकोष बनाये हैं। इन सबमें सबसे बडा और बहुत ही महत्त्वका शब्दकोष जर्मन विद्वान् रॉथ और बॉथलिंगने संस्कृत-जर्मन कोष बनाया जिसकी ७ बड़ी बड़ी जिल्दें हैं और जिसके बनानेमें उन दोनों विद्वानोंने अपने जीवनके महत्त्वके कोई ५० वर्षसे भी अधिक वर्ष बिताये थे। रूसके प्राचीन राजनगर पीटर्सबर्ग(अब लेनिनग्राड)की रॉयल अकादेमीने उस कोषको प्रकाशित किया था जिसके कारण वह पीटर्सबर्ग-संस्कृत शब्दकोष (जर्मन नाम 'संस्कृत वॉर्टेर्‌बुख')के नामसे प्रसिद्ध है। अब पूनास्थित डेक्कन रिसर्च इन्स्टीट्यूट नामकी प्रख्यात शोध-संस्थाकी ओरसे इसी प्रकारके एक बृहत्परिमाण एवं परिपूर्ण शब्दकोषके निर्माणकी योजना की गई है और इसका कार्य चालू है। इस संस्थाकी ओरसे नूतन महाकोषकी रचनाके साथ साथ, प्राचीन कालमें बने हुए भिन्न भिन्न कोषोंका प्रकाशन कार्य भी चल रहा है और अनेकार्थ-तिलक, अमरमण्डन, शारदीया नाममाला, शिवकोष, नानार्थरत्नमाला आदि ऐसे अनेक छोटे-बड़े कोषग्रन्थ छपवाकर प्रसिद्ध किये गये हैं।

ऐसे ही लक्ष्यकी पूर्तिरूप प्रस्तुत शब्दरत्नप्रदीप भी प्रकाशित किया जाता है जो संस्कृतके समृद्ध साहित्यभण्डारको समग्ररूपमें प्रकाशित देखनेवाले संस्कृतिप्रिय सज्जनोंको अवश्य समादरणीय होगा।

प्रस्तुत कोषके कर्ताका कोई नाम नहीं मिलता; और नहीं ग्रन्थके आरम्भमें या अन्तमें कोई ऐसा संकेतविशेष मिलता है जिससे ग्रन्थकारके संप्रदाय आदिके बारेमें भी कुछ कल्पना की जा सके। इसलिये ग्रन्थके संपादक विद्वान्‌ने इस बारेमें जो उल्लेख किया है वह संगत ही है। पर, ग्रन्थके अन्तर्गत एक दो उल्लेख हमें ऐसे दिखाई देते हैं जिससे संभव है कि ग्रन्थका बनानेवाला कोई जैन विद्वान् हो। विद्वानोंकी जिज्ञासाके लिये हम यहां एक विशेष प्रकारके उल्लेखका निर्देश करते हैं—प्रथम मुक्तकके ५६ वें श्लोकमें 'जिन' शब्दके अर्थ दिये हैं।

(१) जिन = वीतराग (जैनोंके उपास्य देव), (२) जिन = विष्णु, (३) जिन = कन्दर्प, और (४) जिन = सामान्यकेवली। इनमेंसे प्रथमके दो अर्थ तो कोषोमें प्रसिद्ध हैं पर तीसरा और चौथा अर्थ जो दिया है वह प्रायः अन्य कोषोंमें नहीं देखनेमें आता। इसमें भी खास करके 'जिन'का चौथा अर्थ जो 'सामान्यकेवली' ऐसा बताया गया है वह विशेष लक्ष्य देने योग्य है। जैन शास्त्रोंमें केवलज्ञान-प्राप्त आत्माको केवली कहते हैं। इनमें जो केवली तीर्थंकर पदके धारक होते हैं वे तीर्थंकर कहलाते हैं और जो केवली तीर्थंकर पदसे रहित होते हैं वे 'सामान्य केवली' कहलाते हैं पर दोनों प्रकारके केवली 'जिन' अवश्य कहलाते हैं। यह 'सामान्य केवली' वाला शब्दप्रयोग जैनशास्त्रोंके सिवा अन्यत्र कहीं देखनेमें नहीं आया है। यह केवल जैनशास्त्रका पारिभाषिक शब्द है। अतः कल्पना की जा सकती है कि इस कोषके कर्ताका जैन होना विशेष सम्भव है।

ऐसा ही एक दूसरा उल्लेख भी हमें ध्यान देने लायक ज्ञात हुआ है। प्रथम मुक्तकके ७१ वें श्लोकमें 'जयन्ती' शब्दके चार अर्थ दिये हैं, जिनमें १) नगरीका वाचक है, (२) औषधीका वाचक है, (३) इन्द्रपुत्रीका वाचक है, और (४) 'चेटककी अनुजा'का वाचक है। यह उल्लेख खास करके जैन-कथा-साहित्यसे ही संबन्ध रखता है। जैन कथासाहित्यके प्रामाणिक आधारोंसे ज्ञात है कि चेटकराज विदेहकी वैशालीका गणाधिनायक था और जयन्ती श्रमण तीर्थंकर भगवान् महावीरकी एक उपासिका थी। इस ग्रन्थमें जयन्तीको 'चेटककी अनुजा' कही है। किंतु जैन कथा-साहित्यसे ज्ञात होता है कि वह चेटककी पुत्री मृगावतीकी ननन्द थी। इस बारेमें यह कहा नहीं जा सकता कि ग्रन्थकारके पास कोई दूसरी परंपरा थी अथवा उसकी गलती थी। जैन आगमोंमें और कथाग्रन्थोंमें इस जयन्तीका विशेषरूपसे उल्लेख मिलता है। अन्य किसी साहित्यमें इसका कोई निर्देश नहीं है। इससे उस कल्पनाको समर्थन मिलता है कि इस कोषका कर्ता कोई जैन विद्वान् होगा।

प्रारम्भमें जो शिवका निर्देश है वह तो मंगलवाचक होनेसे जैनोंके लिये भी समान रूपसे स्मरणीय कहा जा सकता है।

ग्रन्थका मुद्रण करते समय मूल प्राचीन प्रतियां सम्मुख उपस्थित न होनेसे कुछ पाठ शंकित और सन्दिग्ध रह गये हैं। अन्य किसी जगहसे इसके कोई प्रत्यन्तर प्राप्त नहीं हुए इसलिये उन शंकित स्थलोंका परिशोधन नहीं हो सका।

अनेकान्तविहार,
अहमदाबाद.
भाद्रपद १५. वि. सं. २०१३
(२५-९-५६)

मुनि जिनविजय
सम्मान्य संचालक,
राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर
जयपुर

शुद्धिपत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	१८	कान्तो	कान्तौ
६	४	ज्याति	ज्योति
७	१२	कल्पः कल्पो	कल्यः कल्यो
७	१३	कल्पं	कल्यं
७	१७	ज्ञेया	ज्ञेयः
७	२९	A. B. ज्ञेयः	C. ज्ञेया
११	१७	(? द्वे)	(? द्वौ)
२३	८	युक्तके	मुक्तके
२३	१०	मुक्तकः[१२]	[११]मुक्तकः[१२]
३३	२३	काले ह्यनागते	कालेऽनागते
३५	३	मण्डल	मुक्तक
,,	१४	कल्प	कल्य
,,	१५	—	कल्य
३६	६	खजूर	खर्जूर
,,	२७	—	जयन्ती १ ७१
३६-३९	२	मण्डल	मुक्तक
४०	३	,,	,,

CONTENTS

प्रधान संपादकीय वक्तव्य ५

शुद्धिपत्रक ८

Contents i

Preface of the General Editor ii

Introduction v

प्रथमो मुक्तकः १

द्वितीयो मुक्तकः ११

तृतीयो मुक्तकः २०

चतुर्थो मुक्तकः २४

पञ्चमो मुक्तकः ३१

Appendix I : Index of Homonyms ३५

Appendix II : Index of Technical Terms ४०

Appendix III : Index of Indeclinables ४३

PREFACE OF THE GENERAL EDITOR

★

I got an opportunity, by a piece of good luck, to visit Jesalmere and inspect its famous Jaina Jñāna Bhaṇḍāras for a period of five months, from December 1942 to April 1943. I had with me a company of good scholars and copyists viz. Pandit Keshavaram Shastri, Curator of the Mss. Library of Gujarat Vidya Sabha, Ahmedabad, and a scholar of repute, Pandit Amritlal Mohanlal Bhojak, a fine and sound scholar of Prakrit, and a group of authentic copyists of the script of ancient palm-leaf manuscripts-Shri Chimanlal Bhojak, Shri Rasiklal Bhojak, Pandit Shantilal Sheth, and Shri Mulchand Vyas, Shri Jayagopal Vyas and Shri Meghraja Vyas of Nagor and others.

In the course of these five months I got copied from those Bhaṇḍāras hundreds of rare unpublished and unknown small and big works in Sanskrit, Prakit, Apabhramśa, old Rajasthani, Gujarati, Hindi and Vraja languages, existing in manuscript form. I decided to publish some of these in the Singhi Jain Granthamālā edited by me. As a result of this some works are already published and some are in the press.

Śabdaratnapradīpa which is being presented to the learned world as the nineteenth number of Rajasthāna Purātana Granthamālā was discovered from the Jñānabhaṇḍāra of Jesalmere. A copy of this work was prepared by Pandit K. K. Shastri from two-three well preserved Mss. of the Jñāna Bhaṇḍāra. This copy is in possession of the Gujarat Vidya Sabha, Ahmedabad. I had at the time thought of publishing this work.

In 1950 Rājasthāna Purātattva Mandira was established by the Rajasthan Government under my Directorship. In order to bring to light the wealth of literature preserved in Rajashthan, I organised on a large scale the publication of Rājasthāna Purātana Granthamālā. The chief aim of this series is to publish as many works as possible out of hundreds of works lying hidden in Jesalmere and other places in Rājasthāna. Hence the publication of a number of these works in the series, of which the present work is one.

Prof. Dr. Hariprasad Shastri M.A., Ph.D., Assistant Director, B. J. Institute of Learning and Research, Gujarat Vidya Sabha, Ahmedabad, the editor of the work has in his introduction treated all relevant topics

regarding the work. The reader is referred to it for information, regarding these topics.

A cursory glance at the work will show that it is a kind of lexicon in Sanskrit. It is well known that from ancient times many scholars of Sanskrit learning have been preparing various kinds of lexicons and the activity still continues. From ancient times we have such works as Amara, Viśva, Vaijayantī, Medinī, Dhanañjaya, Abhidhāna-cintāmaṇi etc. In modern times we have huge works like Śabdakalpadruma, Vācaspatya Bṛhadabhidhāna, Śabdastomamahānidhi, Śabdacintāmaṇi etc. We have also Sanskrit dictionaries prepared by western scholars like Wilson, Monier Williams, Macdonell and others. Of these the most important and authoritative is the St. Petersburg's Sanskrit-Worterbuch in seven volumes prepared by the German scholars Roth and Bothlingk. The work occupied more than fifty years of life of these scholars. It was published by the Royal Academy of Science, St. Petersburg (now Leningrad), the imperial capital of Russia. For this reason the work is known to scholars as Petersburg Sanskrit Lexicon.

The Deccan College Research Institute of Poona has undertaken on a large scale the preparation and publication of Sanskrit Dictionary based upon, the principles of the modern science of linguistics. Along with the preparation of this work the Institute is publishing old Sanskrit lexicons, small and big, such as Anekārthatilaka, Amaramaṇḍana, Śāradīyā nāma-mālā, Śivakośa, Nānārtha-Ratna-Mālā etc.

This work also is being published with a similar purpose in view. It will, it is hoped, meet with approval of those scholars who desire to see the works of various branches of Sanskrit learning published.

The name of the author of this work is not known nor are there any definite indications in the beginning or end of the work by which we can know something about the religion of the author. So, what the learned editor has said in his introduction, is proper.

There are, however, one or two references in it by which one may guess that the author was a Jain. I refer to one of them for the consideration of the learned. In the 56th verse of the first Muktaka four meanings of 'Jina' are given, viz. (1) Vītarāga (as worshipped by the Jains) (2) Viṣṇu, (3) Kandarpa and (4) Sāmānyakevalin. Of these the first two are to be found in other lexicons; but the third and the fourth meanings are not to be generally found in other lexicons. Of these the fourth meaning viz. Sāmanyakevalin deserves special notice. According to Jain scriptures those who attain Kevala Jñāna are called Kevalins;

and of these those kevalins who establish new Tīrthas are called Tīrthaṅkaras, while the rest simply Sāmānyakevalins; but both are necessarily called Jina. The use of the word Sāmānya-kevalin is not usually found anywhere excepting the Jain works; and so it is a technical term of Jainism. It is therefore possible to say that the author of the work might have been a Jain.

There is another reference which should also be considered. In verse 71 of the first Muktaka four meanings of the word 'Jayantī' are given. Of these the first indicates a city, the second a kind of herb, the third a daughter of Indra and the fourth the 'Anujā' of Ceṭaka. This last meaning has a special connection with Jain tradition and literature. According to these, Ceṭaka was the Gaṇādhipati of Vaiśālī of Videha and Jayantī was a follower of Bhagavān Mahāvīra. There are interesting references to Jayantī in the Jain Āgama and story literature. There is no reference whatsoever to Jayantī in any other Indian literature. However, there is a divergence in the relationship of Jayantī to Ceṭaka according to the Śabdaratnapradīpa. Whether the author of this work had some other Jain tradition in view or whether he is erring we cannot say. Whatever that may be, this reference shows the author of our work familiar with Jain traditions, which was not usual in non-Jain writers. So this reference leads one to believe that the author of this work might have been a Jain.

The reference to Śiva in the beginning is suggestive of Maṅgala and has a proper place in Jain tradition also.

At the time of printing the old original mss., out of which the copy was prepared, were not available and therefore a few readings have remained doubtful. As other mss. were also not available, these doubtful readings could not be amended.

Anekanta Vihar,
Ahmedabad
25-9-56

Muni Jinavijaya
Hon. Director,
Rājasthāna Purātattvānveṣaṇa-Mandira
JAIPUR

Introduction

Manuscripts: This edition is primarily based on two manuscripts from the Bhandars at Jesalmer:—

A— A paper manuscript (No. 337) from the Big Bhandar. It consists of 6 leaves, $10\frac{1}{8}'' \times 4\frac{3}{8}''$ in size. There are 18 lines on each side, and each line contains about 56 or 57 letters.

B— A paper manuscript from the Bhandar of Dungarji Yati.[1] It consists of 8 leaves, $10'' \times 4\frac{1}{2}''$ in size. Each page contains 15 lines, and each line consists of about 49 or 50 letters.

Both the manuscripts are undated.

The text is further collated with a manuscript of another work, the *adhyāyas* of which considerably correspond to the first three *adhyāyas* of this work. It, however, contains no portions corresponding to the remaining two *adhyāyas* of this work. The manuscript is designated *C* and may be described as follows :

C— A paper manuscript of अनेकार्थध्वनिमञ्जरी from the Vṛddhichandra Bhandar at Jesalmer. It consists of 5 leaves, measuring $10'' \times 4\frac{1}{2}''$. The back side of the last leaf is entirely blank, while the writing on its front side covers about half portion of the space.

The colophon of the manuscript states that it was copied at Subhaṭapura on Sunday, the fifth day of the dark half of Māgha in V. S. 1732 (1675 A. D.)

Of these *A* was copied *verbatim et literatim* by my colleague Prof. K. K. Shastree, who was deputed to Jesalmer by the Gujarat Vidya Sabha at Ahmedabad, to copy some selected manuscripts there under the guidance of Muni Jinavijayji. He also collated his copy with the other two manuscripts and noted all variants found in them. This edition is prepared by me on the basis of this material supplied by the Gujarat Vidya Sabha. I have selected apt readings from any of the three manuscripts and tried to amend trivial variants which obviously appeared to be clerical errors. I have, however, had to leave a few inexplicable

1. 8 Cf. Catalogue of Manuscripts in Jaisimer Bhandars.

readings as they are, in asmuch as they could not be referred back to the original manuscripts which were not at my disposal while preparing this edition. I felt this difficulty vehemently in the case of the fifth *adhyāya*, which is copied very unsatisfactorily in both manuscripts. I have endeavoured to trace the correct readings as far as possible, but have succeeded only to a certain extent. The material for all the remaining *adhyāyas* was to the mark on the whole.

All the manuscripts are complete in their contents. *C* has, however, left off the last twenty verses (Nos. 73-92) of the second *adhyāya*, six (Nos. 73-78) of which are later given as an *addendum* at the end of the work.

A comparative study of the manuscripts brings out a few peculiar features, which may be noted as follows: (i) *A* contains the largest number of verses on the whole. (ii) *B* omits a number of verses that are given in *A*, but it rarely adds any verses that are not given in the latter. (iii) In comparision to *B*, *C* differs from *A* considerably in omission as well as in addition. (iv) In relation to *A*, *B* and *C* contain a number of common variants some of which are preferable to those given in *A*.

The Title: The title of the work is generally given in its colophon, but the manuscripts of this work contain no general colophon at all. The *adhyāyas*, however, bear colophons, some[2] of which specify the title शब्दरत्नप्रदीप. It is especially specified in the colophon of the last *adhyāya* in both manuscripts. The title is not mentioned anywhere in body of the work, nor do any verses hint at the exposition of its significance. But the title given in the colophon of the *adhyāyas* is a very apt title for a lexical work of this type.

'शब्दरत्नप्रदीप' means 'a lamp of word-jewels.' The 'jewel-lamp' is not uncommon in the Sanskrit literature. The metaphor of 'word-jewels' is very similar to that of 'word-pearls' given in the first introductory verse in A. The lexicon is thus likened to a lamp, which enlightens full aspects of jewels in the form of words. The title applies to this lexicon very appropriately, as it elucidates the denotation of several words, especially those that yield more than one meaning.

Muktakas: *A*, however, employs a different metaphor for the nomenclature of the *adhyāyas*. *B* designates them 'काण्डs', while *C* styles them

2. B. इति शब्दरत्नप्रदीपे ऽ र्द्धश्लोका [धिका]रो द्वितीयः कांडः समाप्तः ।

B. इति शब्दरत्नप्रदीपे श्लोकाधिकारः चतुर्थकांडः समाप्तः ।

B. इति शब्दरत्नप्रदीपे श्लोकाधिकारः पंचमः कांड समाप्तः ।

A. इति शब्दरत्नप्रदीपे पञ्चमो मुक्त[कः]ः समाप्तः ।

simply 'अध्याय s'. But the colophons in *A* uniformly represent them as 'मुक्तक s.' 'मुक्तक' may technically denote a single verse, the meaning of which is complete in itself. But here the form is applied to a canto, and seems to convey the general sense of a 'pearl.' This is explicitly elucidated in the first verse given in *A*, wherein the word is figuratively styled 'word-pearl' (शब्दमौक्तिक). In accordance with this sense each canto may be taken to be a string of word-pearls (शब्दमौक्तिक), which the verse introduces to the learned with special recommendation.[3] Thus the term मुक्तक well applies to the significance of the introductory verse in *A*. The use of this term may further be traced to the concluding verses of Cantos III and IV in both manuscripts.[4] It is, therefore, adopted preferably in this edition, though it does not fit in the general title of the work.

Contents: The शब्दरत्नप्रदीप is a work of lexical character, as mentioned above. It consists of five मुक्तकs in all. The first three of them deal with homonyms,[5] the different denotations of which are enumerated in detail. The words are not arranged according to the alphabetic order of their initial or final letters. Nor are they classified according to the number of their syllables. But they are here classified into three sections on the basis of another peculiar principle. The first मुक्तक deals with those homonyms, to which the author has to devote a full verse in order to enumerate the different denotations of each of them. It is, therefore, styled श्लोकाधिकार. The second मुक्तक deals with those homonyms that can be treated in a half verse each. So it is called अर्धश्लोकाधिकार. The third मुक्तक deals with those homonyms, each of which requires only a quarter of a verse for the enumeration of its different meanings. It is, therefore, styled पादाधिकार. This system was very common in the Sanskrit lexicons of this type.[6]

The subject-matter of the fourth मुक्तक differs widely from that of the other मुक्तकs. This मुक्तक is devoted to the elucidation of the full denotation of technical terms like सम्राज्, संधिनी, प्रकोष्ठ, दिधिषू, पञ्चालिका, पुराण, etc.

The fifth मुक्तक deals with indeclinables (अव्ययs), many of which denote more than one meaning. It is, however, not restricted to अनेकार्थ

---

3. शुद्धवर्णमनेकार्थं शब्दमौक्तिकमुत्तमम् ।
कण्ठे कुर्वन्ति विद्वांसः श्रद्दधाना दिवानिशम् ॥ (१,१).

4. Cf. III, 32 and IV, 86 in the text.

5. Here the term is intended to denote words having the same form but different meanings (अनेकार्थ or नानार्थ).

6. e. g., in the शाश्वतकोश, the हारावली, the अनेकार्थध्वनिमञ्जरी, etc.

indeclinables, for some indeclinables treated in this मुक्तकं are एकार्थ as well. Nor is this मुक्तक confined to any of the different classes pertaining to the अधिकार system mentioned above. Some indeclinables are treated in full verses, some in half-verses, some in quarters of verses, and some even in fragments of quarters. Here it may be noted that indeclinables are not infrequently associated with homonymous substantives, as most of them bear several senses.

The lexicon contains about 350 verses. It treats about 397 homonyms: 94 in full verses, 181 in half-verses, and 122 in quarters of verses. The fourth मुक्तक devotes 85 verses to the explanation of technical terms which number more than two hundred. The last मुक्तक deals with more than a hundred indeclinables in 40 verses. Thus the शब्दरत्नप्रदीप is a small lexicon, which treats only about 700 words in all.

Treatment: The lexicon is written in verse, which was the usual form adopted for scientific works with a view to facilitate students to commit them to memory. The verses are all composed in the अनुष्टुभ्, except the two आर्याs given at the end of the Third and Fourth मुक्तकs. It would have been better if the author put a corresponding आर्या at the end of the other मुक्तकs as well.

The introductory verses (I, 1-3) are dedicated to Speech. Sarasvatī, the Goddess of speech, is the only deity invoked in the मङ्गलाचरण. The homonyms are not arranged according to any particular order. The choice of the first three homonyms (viz. शिव, गौरी and हरि) however, seems to be significant. The author has simply aimed at classifynig homonyms according to the number of the चरणs required to enumerate their different denotations. Accordingly the homonyms treated in the first मुक्तक generally yield four to eight meanings, those in the second मुक्तक usually convey two to four meanings, while those in the third मुक्तक generally bear only two meanings. The system of grouping homonyms according to श्लोकाधिकार, अर्धश्लोकाधिकार and पादाधिकार is also adopted in some other lexicons like the शाश्वतकोश.[7]

Like शाश्वत the auhor of this lexicon also follows no principle of arrangement for the *inter se* order of the numerous homonyms treated in his lexicon. Some other lexicons, however, have their homonyms arranged according to the alphabetic order of their initial letters or final consonants. The homonyms in the वैजयन्ती, for instance, are all arranged

7. Cf. n. 6 above.

in an alphabetic order of the initial letters, while the विश्वप्रकाश has adopted the alphabetic order of the final consonants. Hemachandra has curiously combined both these orders in his अनेकार्थसंग्रह wherein the words in each काण्ड are first arranged in an alphabetic order of the final consonants and the words ending in a common consonant are then arranged in an alphabetic order of the initial letters. In the मेदिनीकोश all homonyms are first arranged according to their final letters as कान्त, खान्त, etc., each of these groups is next arranged according to the number of syllables as monosyllables, dissyllables, trisyllables, etc., and these words are finally arranged according to their initial letters. It, therefore, becomes very easy to find out a word in the lexicon. But the author of the शब्दरत्नप्रदीप has adopted none of these orders and arranged the homonyms at random. Hence it becomes very difficult to find out a word in this lexicon. An alphabetic Index of the homonyms has, therefore, been indispensable for it.

In the treatment of homonyms the author generally repeats the homonym along with each of its several denotations which are put in apposition to it, e. g., हरिः सिंहो हरिर्भेको हरिर्वाजी हरिः कपिः ॥ (१, ६). But sometimes the author also adopts another method which facilitates him to cite more meanings by avoiding repetitions of the homonym. In that case the meanings are construed with the homonym in the अधिकरण relation, e. g.,

बाणे वाचि पशौ भूमौ दिशि रश्मौ जलेऽक्षणि ।
स्वर्गे मातरि वज्रेऽग्नौ मुखे सत्ये च गोध्वनिः ॥ (१, १५)

In the Third *Muktaka* wherein the homonym generally conveys two meanings, the meanings are sometimes compounded and the homonym is accordingly put in the dual, e. g., बल्लवौ सूदगोपालौ (३, १०).

Genders are shown merely by the form of the word, e. g., शिवं, शिवः and शिवा in I, 4.

The technical terms treated in the Fourth *Muktaka* seem to have been arranged according to the different categories of their subjects. They may be classified into regular groups as treated in synonymous lexicons, e. g.,

(i) Terms pertaining to the अर्थशास्त्र (including political, administrative and military concepts). e. g., सम्राज्, कर्मसचिव, प्रणिधि, व्यूह, सेनाङ्ग, आधोरण, अपस्कर, दीर्घदर्शी.

(ii) Terms pertaining to cattle, e. g., वेहत्, नैचिकी, सुव्रता, संधिनी, प्रष्ठौही, हैयङ्गवीन.

(iii) Terms pertaining to the arm, e. g., प्रकोष्ठ, करभ, प्रदेशिनी, अनामिका, व्याम, प्रादेश, वितस्ति, प्रतल, रत्नि, अरत्नि.

(iv) Terms pertaining to speech, e. g., वाक्य, प्रस्त, निरस्त, कल्य, अश्लील.

(v) Terms pertaining to colours, e. g., श्वेत, बभ्रु, पिशङ्ग, शोण.

(vi) Terms pertaining to time, e. g., माधव, नभस्, नभस्य, ऊर्ज, सहस्, तपस्य, राका, अनुमति, शिनीवाली, कुहू.

(vii) Terms pertaining to learning, e. g., त्रयी, वार्ता, स्मृति.

(viii) Terms pertaining to the sacrifice, e. g. होतृ, अध्वर्यु, सोमपायिन्, दीक्षित, यष्टृ, हव्य, कल्प.

(ix) Terms pertaining to woman, e. g., वीरा, सैरन्ध्री, कात्यायनी.

(x) Terms pertaining to the body, e. g. कूर्च, तारका, जघन, नितम्ब, गुल्फ, and so on.

In the treatment of indeclinables the author has drawn no distinction between those that convey only one meaning (एकार्थ) and those that convey more than one meaning (अनेकार्थ). The different denotations are here generllay put in the अधिकरण, e. g.,

उत्सारणे फडित्याहुर्वषट् वौषट् तु तर्पणे । (५, २७)

Thus the शब्दरत्नप्रदीप is not a merely homonymous lexicon like the शाश्वतकोश or the अनेकार्थध्वनिमञ्जरी. Nor is its title also confined to such a limited denotation. Nevertheless it does not tend to be a complete lexicon like the अमरकोश. It leaves synonyms out of its scope and hence it excludes a large number of common words that enrich the vocabulary of synonymous lexicons. Excepting the section of technical terms, the lexicon mostly appears to be a homonymous work. But even homonyms form a very small number in comparision to those given in a homonymous lexicon like the शाश्वतकोश.

The author: The colophons of the work contain no reference to the author. Nor do the verses of the text make any allusion to him. Thus the manuscripts contain no internal source of information about the author of the work. Nor do we come across any external data whereby we can definitely ascribe the work to an author known from other sources. If the शब्दरत्नप्रदीप be the same as the शब्दरत्नदीप, it may be attributed to Kalyāṇa-malla who is known to be the author of the latter. But as long as we cannot ascertain the identity of the two works, the author of the शब्दरत्नप्रदीप remains unknown to us.

But from his particular preference to the words शिव and गौरी at the commencement of the homonymous section we can infer that his personal leaning in religion was towards Śaivism.

The date : As the work makes no mention of any earlier lexicons, it is not possible to fix the upper limit of its date in a definite way. But its lower limit can be assigned to the thirteenth century, as it is not infrequently quoted by Sumatigaṇi in his गणधरसार्धशतकवृत्ति which was written in V. S. 1295 (1238-39 A. D.)

The homonymous section of this work bears great resemblance to the शाश्वतकोश, which is dated about the 6th century.[8] Like the शब्दरत्नप्रदीप, it also treats homonyms in full, half and quarter verses, and places words at random. But unlike the शब्दरत्नप्रदीप, the शाश्वतकोश has arranged the indeclinables in half and quarter verses. Secondly, both works commence with the word 'शिव,' and two verses (viz. I, 4 and I, 8) in this work are quite identical with the corresponding verses (Nos. 1 and 3) in the शाश्वतकोश. But the works differ widely with respect to the selection of homonyms as well as the composition of the verses. The शाश्वतकोश is obviously more comprehensive and more copious than the शब्दरत्नप्रदीप as far as the homonymous section is concerned. However, this work has enlarged its scope not only by dealing with homonymous as well as non-homonymous indeclinables, but also by adding a section on technical terms. Anyhow its close reletion to the शाश्वतकोश deserves to be taken into consideration. Shri Ramavatara Śarma,[9] and following him the late MMP Haraprasad Shastri[10] enlists it among lexicons written mostly after the मेदिनीकोश (which is assigned to the twelfth century), but I think it may be assigned to an earlier[11] epoch on the ground that it has not adopted any regular order of arranging homonyms, which are usually arranged into certain systematic orders in the post-Śāśvata lexicons like the विश्वप्रकाश (1111 A. D.), the अनेकार्थकोश (12th cent.), the अनेकार्थसंग्रह (1088-1175 A. D.), the नानार्थार्णवसंक्षेप (12th or 13th cent.), and the मेदिनीकोश (12th cent.). Accordingly the शब्दरत्नप्रदीप may be placed between the 7th and the 12th century.

The homonymous section of the शब्दरत्नप्रदीप closely corresponds to the अनेकार्थध्वनिमन्जरी copied in the Jesalmer manuscript which makes no

8. R. Śarma, *Kalpadrukośa*, Introduction, p. xxv.
9. R. Śarma, op. cit., pp. xli ff.
10. Shastri Haraprasad, *Descriptive Catalogue of Sanskrit Manuscripts*, Preface, pp. cxlii ff.
11. Even R. Śarma doubts that some of the works enlisted in this group may be earlier (p. xli).

mention of its author's name. It seems identical with the अनेकार्थध्वनिमंजरी mentioned in Nos. 1029 and 1030 in the Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the India Office. It is undoubtedly distinct from the अनेकार्थध्वनिमंजरी composed by Gadasiṁha in 88 verses. But many of its verses are identical with those in the अनेकार्थध्वनिमञ्जरी composed by Mahākṣapaṇaka of Kashmir (generally ascribed to the 12th cent.), which contains 320 verses. It is, however, very difficult to ascertain relation between the शब्दरत्नप्रदीप and the anonymous अनेकार्थध्वनिमंजरी as well as that between the anonymous अनेकार्थध्वनिमञ्जरी and the अनेकार्थध्वनिमञ्जरी by Mahākṣapaṇaka.

At the end I acknowledge sincere thanks to Muni Jinavijayaji and Prof. R. C. Parikh, who have given me guidance for this work. I also thank the Hon. Secretary of Gujarat Vidya Sabha for supplying the necessary material for editing this work. I should also acknowledge hearty thanks to my colleague Prof. K. K. Shastree who prepared the copy of the Jesalmer manuscripts as well as suggested some corrections in it.

Ahmedabad }
Date 20-2-'53 }

HARIPRASAD SHASTRI

शब्दरत्नप्रदीपः।

प्रथमो मुक्तकः।

[1]शुद्धवर्णमनेकार्थं शब्दमौक्तिकमुत्तमम्।
कण्ठे कुर्वन्ति विद्वांसः श्रद्धधाना दिवानिशम्॥ १

[2]शब्दाम्भोधिर्यतोऽनन्तः कुतोऽप्यागमसंभवात्।
स्वानुवाचैकमानाय तस्मै वागात्मने नमः॥ २

सरस्वत्याः प्रसादेन कविर्बध्नाति यत् पदम्।
प्रसिद्धमप्रसिद्धं वा तत् प्रमाणं च साधुभिः[3]॥ ३

[4]शिवं भद्रं शिवः शम्भुः शिवा गौरी शिवाऽभया।
शिवः कीलः शिवा क्रोष्ट्री भवेदामलकी शिवा॥ ४
गौरी शिवप्रिया प्रोक्ता[5] गौरी गोरोचना[6] मता[7]।
गौरी स्यादप्रसूता स्त्री गौरी शुद्धोभयान्वया॥ ५
[8]हरिरिन्द्रो[9] हरिर्भानुर्हरिर्विष्णुर्हरिर्मरुत्।
हरिः सिंहो हरिर्भेको हरिर्वाजी हरिः कपिः॥ ६
हरिरंशुर्हरिर्भीरुर्हरिः सोमो हरिर्यमः।
हरिः शुको हरिः सर्पः स्वर्णवर्णो हरिः स्मृतः[10]॥ ७

१-२ These verses are not given in B and C. ३ B. साधवः
४ B. शिवः सर्वः शिवः शुक्रः शिवः कीलः शिवः पशुः।
शिवा गौरी शिवा क्रौष्ट्री शिवं श्रेयः शिवा स्नुषा॥
५ B. देवी. ६ A. गौरोद्भवा. ७ C. स्मृता.
८ C adds a st. before this:
श्यामा च श्यामवर्णा च श्यामा मधुरभाषिणी।
अप्रसूता भवेत् श्यामा श्यामा षोडशवार्षिकी॥
९ C. °रिन्दुर्ह°. १० After this verse C adds:
अर्कमर्कटमण्डूका विष्णुवासववायवः। तुरगसिंहशीतांशुयमाश्च हरयो दश॥
दिग्दृष्टिदीधितिस्वर्गवज्रवाग्बाणवारिषु। भूमौ पशौ च गोशब्दो विद्वद्भिर्दशसु स्मृतः॥

[1]मधुर्मद्यं मधु क्षौद्रं [2]मधु पुष्परसं(? सो) मृदुः ।
[3]मधुर्दैत्यो मधुश्चैत्रो [4]मधूकोऽपि मधु[ः] स्मृतः ॥ ८
क्षुद्रा वेश्या नटी क्षुद्रा [5]क्षुद्रोक्ता मधुमक्षिका ।
असहिष्णुः स्मृतः क्षुद्रः क्षुद्रा स्यात् कण्टकारिका ॥ ९
वाहो [6]युग्यं घनो वाहः प्रवाहो वाह उच्यते[7] ।
[9]वाहो मानविशेषश्च वाहो[8] बाहुरिति स्मृतः ॥ १०
इष्टकादिचयो हारो हारो मुक्तागणः स्मृतः ।
हारो [10]मापविशेषश्च [11]हारश्च क्षेत्रमुच्यते ॥ ११
आत्मा भावो मनो भावो भावः सत्ता भवोऽपि च ।
भावः पूज्यतमो लोके पदार्थो भाव इष्यते ॥ १२
[12]कुथा कन्था समाख्याता कुथः स्यात् करिकम्बलः ।
कुथः कुशः कुथः कीटः[13] प्रातःस्नायी द्विजः कुथः ॥ १३
कुशे काले तिले च्छागे कम्बले सलिलेऽम्बरे[14] ।
दौहित्रे खड्गपात्रेऽग्नौ कुतपाख्या प्रवर्त्तते ॥ १४
बाणे वाचि पशौ भूमौ दिशि रश्मौ जलेऽक्षणि ।
स्वर्गे मातरि वज्रेऽग्नौ मुखे सत्ये च गोध्वनिः ॥ १५
श्रियां यशसि सौभाग्ये योनौ कान्तो महिम्नि च ।
सूर्ये संज्ञाविशेषेऽपि[15] मृगाङ्केऽपि[16] भगः [17]स्मृतः ॥ १६
पर्जन्ये राज्ञि गीर्व्वाणे व्यवहर्त्तरि भर्तरि ।
मूर्खे बाले जिगीषौ च देवोक्तिर्नरि कुष्टि(? न्ति)नि ॥ १७
तूर्यास्येऽसिफले पद्मे कुञ्जराग्रकरे[18] दिवि ।
द्वीपे तीर्थे निमित्ते च विशिष्टे पुष्करध्वनिः ॥ १८

---

१ A. मधु क्षौद्रं मधु मद्यं. २ B. मधुश्चैत्रो मधुर्मधुः ।
३ B. मधुर्दैत्यविशेषश्च. ४ B. मधुकोऽपि मधुर्मतः ॥
५ B. क्षुदा स्यान्म°. ६ A. युपे (?); C. योग्यं. ७ A. इत्यपि.
८ C. बाहुः शिशुविशेषः स्यात्. ९ A. B. C. बाहौ.
१० A. मापे वि°; C. मघावि°. ११ B. हारो रजतमु°. १२ B. कुथ्या.
१३ B. कीलः. १४ B. °ले सरे. १५ B. C. °षे च.
१६ B. °ङ्के च; C. °ङ्कोऽपि. १७ B. भगश्रुतिः, C. भगध्वनिः ।
१८ A. °करो.

मूर्ध्नि चित्ते जले काये मुखे ब्रह्मणि मारुते ।
कामे काले सुवर्णे च कः शब्दो द्रविणे ध्वनौ ॥ १९

जीवे राज्ञि रवौ धर्मे तपस्विनि[1] तुरंगमे ।
सिते[2] पक्षिविशेषे च हंसशब्दो हरे[3]ऽपि च ॥ २०

रसो[4] जलं रसो हर्षो रसः शृङ्गारपूर्व्वकः ।
रसः पुष्पादिनिर्यासः पारदोऽपि रसो[5] विषम् ॥ २१

क्षीरे पुष्परसे[6] तोये मण्डे[7] मद्ये घृतेऽसृजि ।
सप्तस्वर्थेषु कीलालं कथयन्ति[8] मनीषिणः ॥ २२

तिल[9]पिष्टे मले मांसे[10] कम्बले कोमलेऽस्थनि[11] ।
वत्से[12] क्षीबे बले प्राज्ञाः पललं परिचक्षते ॥ २३

हये पुच्छे ध्वजे पुण्डे[13] शैले पुंसि गुणाधिके ।
वित्ते[14] धामनि भूषायां ललामेत्युत्तमे[15] स्मृतम्[16] ॥ २४

वसुः सूर्यो वसुर्वह्निर्वसुर्वर्च्चि[17]र्वसवोऽसवः[18] ।
वसु रत्नं वसु द्रव्यं वसवोऽष्टौ धरादयः ॥ २५

अक्षराणि स्मृता वर्णा वर्णाः[19] श्वेता[20]दयो गुणाः ।
वर्णो[21] नाट्यामुखे गाथा वर्णा ज्ञेया द्विजादयः ॥ २६

शुक्लो[22] वर्णोऽर्जुनो नाम पाण्डवोऽप्यर्ज्जुनः स्मृतः[23] ।
अर्जुनस्तृणजातिः स्यादर्जुनः ककुभो द्रुमः[24] ॥ २७

---

१ A. °स्त्रनि. २ A. शिते. ३ C. विधीयते.

४ C omits this verse. ५ B. रसं.

६ B. पुष्पे रसे. But then the word will yield more than seven senses. Again, B repeats रसे in the second quarter.

७ B. मद्ये मण्डे रसेऽसृजि । C. मद्ये मेघे. ८ B. प्रवदन्ति.

९ A. °पृष्टे; C. पिष्टमले च माले च. १० A. मासे.

११ C. °श्मनि । १२ A. सदा क्षीवे; C. संज्ञायां जीवने.

१३ A. पुण्ड्रे (?) १४ A. विरौ (?); C. विषे. १५ A. °त्तमं.

१६ B. मतः । १७ A. °स्वश्चिर्व°. १८ A. °वोऽसवः ।

१९ C interchanges b-d. २० A. स्वेता°. २१ A. वर्णो.

२२ B. शुक्लोऽर्जुनो नाम वर्णो. २३ C. °नो मतः. २४ A. °भः [स्मृतः] ॥

[1]व्रणस्यावरणं पट्टः पट्टो भूर्जाहिताक्षरः ।
वीरदीक्षापटः[2] पट्टः पट्टः स्या[3]दधिवासनम् ॥ २८

[4]बलिः पूजोपहारः स्याद् बलिर्दानवपुंगवः ।
बलिः स्त्रीमध्यभागोर्मिर्बलिश्चर्म जराकृतम् ॥ २९

रन्ध्रे वस्त्रे तथा मध्ये व्यवधानेऽन्तरात्मनि ।
बहिर्योगे[5]ऽवकाशे च विशेषे व्यसनेऽन्तरम्[6] ॥ ३०

अरिष्टं गृहमित्युक्तं अरिष्टो वृषभा[7]सुरः ।
काकनिम्बावरिष्टौ चारिष्टं क्षेममिहेरितम्[8] ॥ ३१

इन्द्रियं कम्बलं ज्ञेयं[9] कम्बलो रोमजः पटः ।
कम्बलश्च गवां सास्ना कम्बलं कमलं स्मृतम्[10] ॥ ३२

मण्[11]डलं वर्तुलं प्रोक्तं संघातो मण्डलं स्मृत[12]म् ।
मण्डलं भूमिभागश्च मण्डलं सु(? स)रमा स्मृ[13]तः ॥ ३३

कुन्तलः केशपर्यायः कुन्तलो देशवाचै[14]कः ।
कुन्तलः सूत्रधारश्च कुन्तहस्तश्च कुन्तलः ॥ ३४

मणिर्लिङ्गाग्रिमो[15] भागो मणिः प्रोक्तो मगध्व[16]जः ।
मणिः कूपमु[17]खोत्सेधः पद्मरागादिको मणिः ॥ ३५

तन्त्रं शास्त्रं कुलं तन्त्रं तन्त्रं सिद्धौषधिक्रिया ।
तन्त्रं सुखं बलं तन्त्रं तन्त्रं वे[18]प(? व)नसाधनम् ॥ ३६

नेत्रं वस्त्रविशेषः स्यात् नेत्रं चक्षुरुदाहृतम् ।
परावर्त्तगुणो नेत्रं नेत्रः कस्तूरिकामृगः ॥ ३७

---

१ B gives this verse after the next one.

२ B. °पटे.   ३ B. °दपि चा(? वा)°.

४ B gives this line after the next one.

५ B. °र्योगविकाशे.   ६ A. °न्तरा ; C. च तरे(? रं)ऽतरं ।

७ B. °भोऽसुरः । C. °ष्टः स्याद् वृषासुरः ।

८ B. च अरिष्टं क्षेममीरितम् ॥   ९ B. प्रोक्तं.   १० B. विदुः ॥

११ B gives this line after the next one.

१२ B. C. मतम् ।   १३ C. सुरता शृ(श्रु)तं.   १४ C. °पालकः ।

१५ C. °भागः स्याद्.   १६ B. °गो व्रजः (!) ।

१७ B. °मुखः सन्धिः   १८ A. C. वचनसाधनम् ।

[1]वातादिप्रकृतिर्धातुर्धातुः शैलोद्भवः[2] स्मृतः ।
क्रियाभावः स्मृतो धातुर्धातुर्देहरसादिकः[3] ॥ ३८
[4]काण्डो बाणस्तुला काण्डः काण्डः संपाते[5] इष्यते ।
काण्डः कालो बलं काण्डं काण्डं मूलं[6] तरोरपि ॥ ३९
सुधा प्रासादभाग्[7]द्रव्यं सुधा विद्युत् सुधामृतम् ।
सुधेह[8] भोजनं ज्ञेयं सुधा धात्री सुधा स्नुही ॥ ४०
वेला कालविशेषः स्यात् वेला सिन्धुजलोद्धतिः[9] ।
वेला सेवाङ्गुलिच्छेदो वेला द्रोण्यान्तरावनिः[10] ॥ ४१
उत्सवे[11] च प्रकोष्ठे च मुहूर्त्ते नियमे तथा ।
क्षणशब्दो व्यवस्थायां समयेऽपि[12] निगद्यते ॥ ४२
भ्रूणो भीरुर्द्विजो भ्रूणो भ्रूणो गर्भाशयाश्रयः[13] ।
भ्रूणोऽन्त्यजः शिशुर्भ्रूणो भ्रूणो विकल उच्यते ॥ ४३
[14]श्रेष्ठं इन्द्र इति ख्यातो देवराडिन्द्र[15] उच्यते ।
[16]शब्दादिविषयाः पञ्च प्रसिद्धा इन्द्रसंज्ञया ॥ ४४
अहिर्दैत्यविशेषः स्यात् सूर्योऽहिरहिरध्वगः[17] ।
भुजंगोऽहि[ः] समाख्यातः सिंहिकासूनुरप्यहिः ॥ ४५
व्यालोऽहिः श्वापदो व्यालो व्यालः स्याद् व्याकुलः करी ।
[18]प्रमादवान् नरो व्यालो [19]सिंहो व्याल उदाहृतः ॥ ४६
पयस्विन्यर्जुनी धेनुर्धेनुः कुञ्जरकामिनी ।
असिपुत्री स्मृता[20] धेनुर्धेनुर्वृत्तिः शुभंकरी ॥ ४७
धर्म्मो वृषो वृषः श्रेष्ठो वृषो गौर्मूषिको[21] वृषः ।
वृषो बलं वृषः कामो वृषलो वृष उच्यते ॥ ४८

---

१ B gives this line after the next one.
२ B. C. सै(शै)लोपलोद्भवः । ३ B. देहे र°.
४ C gives this verse after the next one.
५ B. C संघात. ६ B. बुध्नं तराणि च । ७ C. प्रसेव प्रभवे द्रव्यो(व्यं)
८ C. सुधैव ९ C. न्नतिः । १० B. वनी । C. °न्तरे ध्वनिः ।
११ C. उत्सेधे. १२ C. °ये च. १३ A. °श्रयाशयः ।
१४ B gives this line after the next one.
१५ A. °जेन्द्र १६ C. °यान्ते च......शक्रयाः ।
१७ B. सूर्योरहि (?)अहिध्वजः । १८ A. प्रनाद°; C. प्रासाद°
१९ A. व्यालो बाल. २० B. मता. २१ °षको

श[1]लिर्मूर्खः शलिर्भृङ्गः शलिः कीलः शलिर्गदः ।
शलिः प[2]र्वविशेषश्च शलिः कलिरुदाहृतः ॥ ४९
योगो [3]ज्योतिर्विशेष[4]श्च संयोगो योग इत्यपि ।
[5]योगश्चागामिलाभः स्यात् समाधिर्योग उच्यते ॥ ५०
सीता लक्ष्मीरु[6]मा सीता सीता सस्याधिदेवता ।
सीता सीरध्वजापत्यं सीता मन्दाकिनी मता ॥ ५१
आदिमः क्षत्रियो नाभिर्नाभिश्चक्रस्य पिण्डिका ।
कुटुम्बस्याग्रणीर्नाभिर्नाभिर्निम्नोदरा मता[7] ॥ ५२
गोत्रं नामान्वयो गोत्रं गोत्रश्च धरणीधरः ।
गोत्रा वसुंधरा प्रोक्ता[8] गोत्रः सत्यवचः स्मृतः ॥ ५३
घनो मेघो घनं सान्द्रं कांस्यतालध्वनिर्घ[9]नः ।
घनो मन्द्रो घनं नित्यं घनः स्याल्लोहमुद्गरः ॥ ५४
रा[10]मा स्त्री जामदग्निश्च रामो रामौ सितासितौ ।
रामः पशुविशेष[11]श्च रामो दशरथात्मजः ॥ ५५
वीत[12]रागो जिनः प्रोक्तो जिनो नारायणस्तथा ।
कन्दर्पः स्याज्जिनश्चैव जिनः सामान्यकेवली ॥ ५६
शु[13]क्रं देहवतां बीजं शुक्रमक्षिरुजं विदुः ।
ज्येष्ठमासः स्मृतः शुक्रः शुक्रो दैत्यपुरोहितः ॥ ५७
वीणा[14]दण्डः प्रवाल[15]ः स्यात् प्रवालः पल्लवो नव[16]ः ।
प्रवालो विद्रुमः प्रोक्तः प्रवालः प्रबलो मतः ॥ ५८

---

१ B throughout gives सलि. B gives this verse after the next one.
२ B. शपथ(? पथ)°. ३ B. योनि°. ४ B. °षः स्यात्.
५ B. योगः स्याल्लब्धिलाभश्च; C. °मिको लाभः
६ C. क्षमा. ७ C. स्मृता.
८ B. C. ज्ञेया ९ B. °नो; C. °नो मुस्ता.
१० B omits this verse; C gives this verse and the next one after No. 59. ११ C. °षः स्यात्.
१२ B omits this verse. For C cf. n. 3 above.
१३ B C omit this verse.
१४ C gives this verse and the next one before No. 55.
१५ B. °लं. १६ B. मतः ।

कोणो[1]ऽश्वो महिषः कोणः कोणः कोटिरिति स्मृतः ।
कोणो गृहैकदेशः[2] स्यात् कोणो वीणादिवादनम् ॥ ५९

तालः कालक्रियामानं तालं पातालमिष्यते ।
वृक्षभेदः स्मृतस्तालः तालः करतलध्वनिः ॥ ६०

काष्ठा दशा ककुभ् काष्ठा काष्ठा प्रोक्ता वसुंधरा ।
काष्ठा कालविशेषः स्यात् काष्ठं दारु निगद्यते ॥ ६१

पलाशो[3] राक्षसः ख्यातः[4] पलाशश्छदनं[5] स्मृतम् ।
पलाशो हरितो वर्णः पलाशः पाश उच्यते ॥ ६२

सत्रं गृहं धनं सत्रं सत्रं दानमिहेरितम्[6] ।
सत्रं धाम[7] वनं[8] सत्रं सत्रं संचरितं[9] मतम् ॥ ६३

कलासु कुशलः कल्पः कल्पो ज्ञेयो निरामयः ॥
कल्पं कालमिति[10] प्रोक्तं कल्पं मद्यमिति[11] स्मृतम् ॥ ६४

विष्टरो बर्हिषा(? षां) मुष्टिर्विष्टरं ज्ञेयमासनम् ।
विष्टरो वृक्ष इत्युक्तो विष्टरः क्रतुरेव च ॥ ६५

सभा समितिरित्युक्ता समितिः संयुगावनिः[12] ।
समितिः समयो[13] ज्ञेया[14] समितिः [15]संगतिः स्मृता[16] ॥ ६६

सितः[17] शुक्लः सितो वृद्धः सितं रजतमुच्यते[18] ।
सायकोऽपि सितो ज्ञेयः सितो दैत्यपुरोहितः ॥ ६७

चित्रकं तिलकं प्रोक्तं चित्रकः श्वापदो मतः ।
चित्रको मूलजातिश्च चित्रको व्यन्तरो मतः[19] ॥ ६८

---

१ A. C. cf n. 10 on p. 6
२ B. °शश्च.
३ B gives b before a.
४ B स्मृतः   ५ B. °सं सदनं ज्ञेयम्   ६ C. °मिति स्मृतम् ।
७ A. नाम; B. सीम (?)   ८ C. घनं, but cf. धनं सत्र in a.
९ C. सत्रेरितं.   १० B. C. कल्य°, but cf. मद्य in d.
११ B °द्यं प्रकीर्तितम् ; C °द्यं विशेषतः ।   १२ B. °वनी ।
१३ C. समये; B. संयुगो.   १४ A. B. ज्ञेयः.   १५ A. संगितिः   १६ C. °तिर्मता ॥
१७ B, C, सितो वृद्धः सितः शुक्लः   १८ C. °मिष्यते ।   १९ B. C. °रोरगः

धातकी प्रोच्यते धात्री धात्री चामलकी मता[1] ।
धात्री वसुंधरा ख्याता[2] धात्री स्यात्[3] स्तनदायिनी ॥ ६९

द्रोणः स्यात् कौरवाचार्ये(? र्यो) द्रोणः काक इतीरितः ।
द्रोणो गिरिविशेष[4]ः स्याद् द्रोणः[5] स्याच्चतुराढकः ॥ ७०
[6]जयन्ती नगरी प्रोक्ता जयन्ती चेटकानुजा ।
जयन्त्यौषधभेदः स्यात् जयन्ती शक्रसंभवा ॥ ७१

रोहित[7]ः शक्रकोद[8]ण्डो रोहितो मत्स्यगपुंगवः ।
रोहितो लोहितो वर्णो मृगजातिश्च रोहितः ॥ ७२
बलो हली बलं सैन्यं बलं स[9]त्त्वं बलौषधी ।
रत्नयोनिर्बलो दैत्यो बला लक्ष्मीर्बला मही ॥ ७३

प्रतिग्रहो द्विजग्राह्यः सैन्यपृ[10]ष्ठं प्रतिग्रहः ।
प्रतिग्रहोऽनुबन्ध[11]ः स्यात् प्रतिग्राहः प्रतिग्रहः ॥ ७४
[12]कुमातृकं कदम्बः स्यात् कदम्बो [13]विशिखो म[14]तः ।
कदम्बो वृक्षभेदश्च कदम्बो निर्गुणः पुमान् ॥ ७५

प्रियको बीजसारो [15]द्रुः प्रियको [16]द्वीपिचित्रकः ।
प्रियकः प्रियतोयः स्यात् प्रियको मुक्तक[17]व्रती ॥ ७६
अक्षो बिभीतको वृक्षः पाशकोऽक्षोऽक्षमिन्द्रियम् ।
अक्षो रावणिरित्युक्तः कुल्यमक्षं च निम्नगम् ॥ ७७
चक्रः पक्षिविशेषश्च [18]चक्रं व्यावर्तनं मतम् ।
चक्रं राष्ट्रं च संघश्च [19]रथाङ्गं चक्रमायुधम् ॥ ७८
सत्यसंध[20]ः खरो ज्ञेयः खरोऽपि पौ[21]रुषो मतः ।
खरो रासभ इत्युक्तो व्यवहारपटुः खरः ॥ ७९

---

१ B. शिवा. २ B. ज्ञेया. ३ B. च

४ B. °षश्च. ५ B द्रोणश्च चतु°. ६ A omits this verse.

७ B. रोहितं. ८ B. °दण्ड. ९ A. सत्यं. १० B. °पृष्ठे.

११ C. °बन्धश्च. १२ B. C. कुमारिका. १३ B. मन: शिखरो; C. मन: शिखर:

१४ C. स्मृतः। १५ B. °सारद्रु:। C.°सारंग:।

१६ B. बीज° १७ B. °कः(को) व्र°

१८–१९ B–C interchange b and d.

१९ C. द्रव्यांगं २० B. °बंधः २१ C. पुरुषोत्तमः ।

जातिः स्यात् सहजो[1]ख्यानं मालती जातिरुच्यते ।
गोत्रादि जन्म जातिश्च जातिश्[2]चुल्लीति कथ्यते ॥ ८०
गोविषाणं [3]फणो ज्ञेयो भुजंगम[4]फणः फणः ।
फणा जटा फणा कृष्णा फणा मन्थानकुण्डली ॥ ८१
तिलको वृक्षभेदः स्यात् ति[5]लको बिन्दुचित्रकम् ।
तिलकं क्लोमसंज्ञं स्यात् प्रधानं तिलकं मतम् ॥ ८२
गन्धर्वो देवजातिः स्यात् गन्ध[6]र्वः स्यात् तुरंगमः ।
गन्धर्वश्च स्मृतो [7]गाता गन्धर्वो मृगपुंगवः ॥ ८३
शृङ्गं प्रधानमिच्छन्ति शृङ्गं च शिखरं विदुः ।
शृङ्गं विषाणमित्याहुः शब्दकोशविचक्षण[ा]ः ॥ ८४
[8]सारंगः कुञ्जरः ख्यातः सारंगश्चातको मतः ।
सारंगः पर्वतो ज्ञेयः सारंगो हरिणः स्मृतः ॥ ८५
[9]करणं कारणं विद्यात् [10]करणानीन्द्रियाणि च ।
[11]करणो [12]जातिभेदश्च क्षेत्रं करणमिष्यते ॥ ८६
पुण्डरीकः स्मृतो व्याघ्रः पुण्डरीकः कमण्डलुः ।
पुण्डरीकः सितो वर्णः पुण्डरीकं सरोरुहम् ॥ ८७
[13]कमलं कमलं प्रोक्तं कमलं चन्द्रमा भवेत् ।
कमलं क्रमयुग्मं च कमलं मस्तकं विदुः ॥ ८८
[14]कमलं जलमाख्यातं कमलो हरिणः स्मृतः ।
कमलो जलदः प्रोक्तः कमलं मुकुटं विदुः ॥ ८९
[15]अपत्येऽथ पृथिव्यादौ कालेऽतीते च राक्षसे ।
[16]प्रेते प्राणिनि कीनाशे भूतशब्दं [17]प्रचक्षते ॥ ९०

---

१ C. °जह्नानं. २ A. °श्वोर्णीति ; C. श्व(श्चु)ल्ली च.
३ B. फणा ज्ञेया. ४ B. °फणा फणा । ५ A. तिलकं.
६ C. °र्वोऽपि. ७ A. गीतो.
८ C interchanges a and b, giving °तको ज्ञातः and °ञ्जरो मतः ।
९ C omits this verse. १० B interchanges b and d.
११ B. °णं. १२ A. वृक्ष° १३ B C omit this verse.
१४ B C omit this verse; A gives it in the margin.
१५ A. C. अपम्ये ; B. औपम्ये. १६ A. प्राप्ते. १७ B. प्रकीर्तितम् ।

सरभोऽष्टापदो ज्ञेयः[1] स्वर्णमष्टापदः स्मृतः[2] ।
[3]किलीतकोऽष्टापदः[4] स्यात् कृमिजातिरुदाहृतः ॥ ९१
बालः[5] केशो जलं बालं बालं काशतृणं तथा ।
बालकं[6] गन्धद्रव्यं च जटा[7]जूटं च बालकम् ॥ ९२
बालकः खेचरो व्याघ्रो बालकः पृथुक[8]स्तथा ।
बालः[9] सर्पः शिशुर्बालो बालो वेग उदाहृतः ॥ ९३
श्यामा रात्रिस्त्रिवृत् श्यामा श्यामा स्त्री मुग्धयौवना ।
श्यामा प्रियंगुराख्याता श्यामा स्याद् वृ[10]न्दारिका ॥ ९४
शुभा सुधा शुभा हत्या [11]भृंगक्षीरी शुभा मता ।
शुभं श्रेयः शुभा शोभा शुभा प्रोक्ता[12] हरीतकी ॥ ९५
कान्तारं काननं प्रोक्तं कान्तार[:][13] पाकशासनः ।
इक्षुभेदश्च कान्तारः कान्तारो दुर्भरोदरः ॥ ९६
खर्जूरं फलभेदश्च[14] खर्जूरं रजतं मतम् ।
खर्जूरः क्षुद्रजातिः स्यात् खर्जूरस्तृणगोधिका[15] ॥ ९७
गुरुः[16] पिता गुरुर्ज्येष्ठो गुरुर्देवपुरोहितः ।
दुर्वाहोऽपि गुरुः प्रोक्तो गुरुः [17]शिष्याभिषेकदः ॥ ९८

इति शब्दरत्नप्रदीपे[18] श्लोकाधिकारः प्रथमो[19] मुक्तकः[20] ॥

---

१ C. °दश्चैव. २ B. °पदं मतम्; C. °पदं स्मृतम् ।
३ B. कीलि°; C. कि(की)लालको°. ४ B. C. °पदश्च.
५ C omits this line. ६ B interchanges this line with the second line of the next verse.
७ B. °जालं. ८ C. कः स्मृतः ।
९ B interchanges this line with the second line of the previous verse. C omits it. १० C. वृद्धा दा°.
११ B. स्नुही°; C. स्नुहीक्षीरा. १२ C. ख्याता. १३ B. C. रं.
१४ B. °दः स्यात्; C. °लका(को) वृक्षः. १५ C. °कोचिका ।
१६ C omits this verse and gives the following verse instead:
बाह्लीकं हिंगुमा(रा)ख्यातं बाह्लीकं कुंकुमं तथा ।
बाह्लीकः स्याज्जनपदो बाह्लीकोऽ(का)श्चोऽ(श्वा)श्वजातयः ॥
B adds it before this verse
१७ B. शिष्यादयः स्मृताः ॥ १८ A omits; C. इत्यनेकार्थध्वनिमञ्जर्यां.
१९ B. C. °मः । २० B. कांडः समाप्तः; C omits.

द्वितीयो मुक्तकः ।

इतः प्रभृत्यनेकार्थाः शब्दाः श्लोकार्धगामिनः ।
वेदितव्या बुधैः पश्चात् प्रत्यंहि कृतसंग्रहाः ॥ १
[1]तटो वप्रः पिता वप्रो वप्रः प्राकारे[2] उच्यते ।
सर्पो व्याडः शफो व्याडो व्याडो ज्ञेयश्चतुष्पदः[3] ॥ २
[4]अङ्गे दारेषु शय्यायां तल्पशब्दो विधीयते[5] ।
तारास्वग्नौ गृहस्थाने धिष्ण्यमाहुर्मनीषिणः[6] ॥ ३
अभिख्येति समाख्याता कीर्त्तौ कान्तौ च नाम्नि च ।
रम्भा देवाङ्गना प्रोक्ता रम्भा स्यात्[7] कदलीति च[8] ॥ ४
मोचा [9]खल्येति विख्याता मोचा[10]पि कदली मता ।
कक्षेति भवनान्तर्भूमे(? मे)खलागजरज्जुषु ॥ ५
स्यादाषाढे विशुद्धेऽग्नौ शुक्रेऽनुपहते शुचिः ।
[11]शैक्रेऽपि वार्षिके मेघे मत्तनागे घनाघनः ॥ ६
संक्षेपे भक्त[12]सिक्थे(क्थे) तुच्छधान्ये पुलाक–वाक् ।
[13]च(ब)ले मरुति मासार्द्धे पक्षोऽभिभवपार्श्वयोः ॥ ७
वृक्षभेदे[14] करीरः स्यात् [15]घटे वंशा[16]ङ्कुरेऽपि च ।
देहे दारेषु[17] केदारे क्षेत्रं [18]बुद्धैः(? द्धे) प्रकीर्त्त्यते ॥ ८
श्रेष्ठं कम्बलमे[19]ल्पं च विद्या[20]देकाक्ष(ख्य)या बुधः ।
निर्यूहो निर्गते[21] पीडानिसर्गद्वारभूमिषु ॥ ९
[22]अविशब्दो रवौ मेघे पर्वते[23]ऽपि निगद्यते ।
[24]मृगपर्वतमन्त्रेषु निकृष्टेऽपि च संवरः ॥ १०

---

१ B. वटो वप्रं. २ B. C. केदार. ३ A. B. °पथः ।
४ B. रंगे. ५ B. °ब्दोऽभिधीयते । ६ C. °विचक्षणाः ।
७ C. च. ८ C. °ली मता ॥
९ B. खल्वेति. १० C. मोचा च. ११ B. शुक्रे°.
१२ A. C. °पिच्छे. १३ B. C. बाले. १४ A. C. °भेदः
१५ A. पटे. १६ C. वंध्याकरे° १७ A. दारे च.
१८ B. शुद्धो(द्धे) च की°. १९ B. °मन्नं.
२० B. °देकं क्षयं. २१ B. C. °निर्ग्गता ; A. निर्मिते.
२२ B. अर्च्चिं°. २३ C. °ते च. २४ B. C. शृंग.°

धुनो(?) धवे च दम्भे च गह्वरे गहनेऽपि च ।
न्याये तुल्ये विधौ काले दण्डे वित्ते च कल्प–वाक् ॥ ११
आत्मेति ब्रह्म–धी–देह–मनो–यत्न–धृतिष्वपि ।
पर्याप्तौ शिक्षिते पुण्ये क्षेमे च कुशलध्वनिः ॥ १२
प्रत्ययः शपथे छिद्रे विश्वासास्तित्वहेतुषु ।
पदं स्थाने परित्राणे क्रमे वस्तुप्रतिष्ठयोः ॥ १३
दोषे व्यपगमे दण्डे स्यादत्यय इति श्रुतिः ।
स्वभावे तेजसि स्थाने धामशब्दो निगद्यते ॥ १४
ज्ञाता(तौ) चात्मनि चात्मीये धने स्वाख्या प्रयुज्यते ।
कूटाख्यानृतयन्त्राभ्यां घने मायार्धरेषु च ॥ १५
परिच्छेदे प्रमाणेऽल्पे मात्राख्या परिकीर्त्यते[10] ।
इडाशब्दश्च पानीये भूमौ वा व्यसने मतः ॥ १६
साधु-सत्ता-प्रशस्येषु त्रिष्वेव सदिति ध्वनिः ।
प्रधाने राज्यलिङ्गे च ककुदाख्या [13]प्रवर्तते ॥ १७
मानमण्डनयोर्निष्को निष्को दीनाररुक्मयोः ।
युग्मे(ग्य)संयोगयोरङ्कः स्यादङ्को लेख्यलक्ष्मणोः ।
विशिरस्के नरे नीरे कबन्धाख्या खलेऽपि च ॥ १८
मरौ वृक्षविशेषे च धन्वन्–शब्दश्च कार्मुके ।
अक्षिलोम स्मृतं वर्त्म वर्त्म मार्गश्च कथ्यते ॥ १९
वर्ष्म गृहप्रमाणं स्याद् वर्ष्म देहश्च कथ्यते ।
दायादः सहन(ज)ः प्रोक्तो दायादस्तनयः स्मृतः ॥ २०

---

१ A. धुनी. २ C.–वाग्–. ३ A. °स्तिक्क[शा]नुषु ।
४ B. लक्ष्ये ; C. लक्षे.
५ A. °गते. ६ C. प्रवर्तते. ७ B. °ख्या मृग°.
८ A. °क्षरेऽपि ; B. °करेषु. ९ B. °त्राणे.
१० B. °कीर्तितः(ता), C. च प्रवर्तते । ११ C. °नेषु च ॥
१२ C adds before this
कीकसं शिल्पमित्युक्तं कारु शिल्पं च कथ्यते । महेश्वरो हरः प्रोक्तश्चौरस्तु हर उच्यते ॥
१३ B. प्रकीर्त्यते. १४ cf. st. 54 belaw. A. नागचन्दनयो°.
१५ A. °रुक्जयोः । १६ C. युयुत्सुसंगयो°. १७ C. °स्तु. १८. B. रोम.
१९ C. कीर्त्यते. २० A. हेम° २१ B. कीर्तितः ।

विग्रहो वैयेवस्कन्दो विग्रहो वपुरुच्यते[1] ।
प्रकोष्ठः[2] कूर्प्परस्याधः प्रकोष्ठो द्वारकोष्ठकः ॥ २१
प्रोक्तं वितानमुल्लोचं वितानं शून्यमुच्यते ।
सती दाक्षायणी देवी सच्चरित्राबला सती ॥ २२
वधूर्नारी[3] वधूर्भार्या वधूः पुत्रवधूः[4] स्मृता ।
प्रेक्षे[5] कशिपुरित्युक्तिः प्रावारः कशिपुर्मतः ॥ २३
आडम्बरो गजारावस्तूर्यनादश्च[6] भण्यते[7] ।
कपर्दो[8] हरजूटौघः कपर्दः श्वेतकाकिणी ॥ २४
तूबरो निर्विषाणो गौर्नि[:]स्मश्रुस्तूवरः[9] पुमान् ।
पापीयांसो नृशंसाः स्युर्नृशंसा वन्दिनो[10] मताः ॥ २५
शारदस्तु शरत्कालः स्यादधृष्टश्च[11] शारदः ।
उपह्वरो रहःस्थानं समीपं स्यादुपह्वरः ॥ २६
कश्मलः[12] स्यात् पिशाचश्च[13] कश्मलो मोह उच्यते ।
अवज्ञा कथ्यते रीढा रीढा गतिरपीक्ष(ष्य)ते[14] ॥ २७
प्रस्वेदोऽपि[15] निदाघः स्यात् निदाघो ग्रीष्म उच्यते ।
केतुर्ग्रहविशेषः[16] स्याद् ध्वजः केतुरुदाहृतः ॥ २८
वर्द्धनं छेदनं प्रोक्तं[17] वर्द्धनं वृद्धिरिष्यते ।
कशेरुकं जले कन्दे पृष्ठास्थि स्यात् कशेरुकम् ॥ २९
निर्वातमाश्रयं विद्यादभिन्नः कवचस्तथा ।
कीनाशश्च कदर्यः स्यात् कीनाशौ यमकार्षकौ ॥ ३०

---

१ C. देह उ°. २ C adds before this line:
कीरो वृक्षविशेषः स्यात् कीरः[च] शुक उच्यते । क्लीबश्च कातरः प्रोक्तः क्लीबः षंढः प्रकीर्तितः ॥
३ B. स्तन्य°. ४ B. C. °वधूरपि । ५ C. भक्षः.
६ A. °रैश्वर्यें. ७ B. कथ्यते ।
८ C gives this line after the next one.
९ A. °र्निस्पश्रु°, B. र्नृश्रेष्ठं तू°. १० C. °नः स्मृताः ॥
११ A. °दधृदश्च, B. त्कलपृश्च, C. कलापृष्ठश्च.

१२ B gives this verse after the next one, while C gives the first line of this verse after the first line of the next verse and the second line of this verse after the second line of the next verse. १३ A. B. °चः स्यात्. १४ B. रातिररीक्षते (?) ॥

१५ cf. n. 12 above. १६ B. प्राहुर्व°. १७ C omits this verse.

नागो वृक्षविशेषः स्याद् नागौ वारणपन्नगौ ।
कुलं संघः कुलं गोत्रं शरीरं कुलमुच्यते ॥ ३१

[1]पूगं पूगीफलं ज्ञेयं तथा पूगं कदम्बकम् ।
ज्ञेयाः सुमनसो देवाः कुसुमानि च सज्जनाः ॥ ३२

कुसुमं पुष्पमित्याहुः स्त्रीरजश्च तदाख्यया ।
धवः पतिर्धवो भीरुर्वृक्षजातिर्धवो मतः ॥ ३३

त्र्यम्बकस्ताम्रधातुः स्यात् त्र्यम्बकश्च त्रिलोचनः[2] ।
सिफा सेफालिका प्रोक्ता[3] सिफा शिखा सिफा जटा ॥ ३४

पुण्यं सुविहितं कर्म्म पवित्रं पुण्यमुच्यते ।
[4]ब्रह्म वैज्ञानमित्युक्तं ब्रह्मा पौनर्भवो मतः ॥ ३५

खलो राशिः खलो नीचः खलः पिण्याक उच्यते[5] ।
शाला श्लाघा शिला शाला शाला शाखा च वेश्मनः ॥ ३६

माल्यो [6]मान्यः स्थिरो माल्यो माला माल्यमुदाहृतम् ।
राढा देशविशेषः स्यात् शोभा राढाभिधीयते ॥ ३७

पलं मांसं पलं मानं पलो मूर्खः पला तुला ।
आलिः सहचरी ज्ञेया पङ्क्तिरालिः प्रकीर्त्तिता ॥ ३८

दलमर्द्धं दलं पर्णं दलं हस्त्यादि साधनम् ।
आजिः स्यात् समभूभागः संग्रामोऽप्याजिरुच्यते ॥ ३९

प्रतिज्ञा संगरो ज्ञेयः संग्रामः संगरो मतः ।
उलूकः पुरुहूतः स्यात् पुरुहूतः पुरंदरः ॥ ४०

[7]अमृतं वारि विज्ञेयं देवभोज्यं तथामृतम् ।
कुन्त्या [9]भूमिः समाख्याता कुन्त्या [8]कुन्तकदम्बकम् ॥ ४१

अन्तके[10]ऽजंगरे कुन्ते मृत्युः स्यान्मरणेऽपि च ।
संपा विद्युत् पतिः संपा संपा शङ्खध्वनिर्मतः ॥ ४२

---

१ A. सुमनो(नौ?) कुसुमसज्जनौ ॥ B. सुमनः कुसुमसंज्ञिताः(?तम्) ॥

२ C. महेश्वरः. ३. B. C. ज्ञेया. ४ B C omit this line.

५ C. °मिष्यते । ६ B. पाल्यं.

७ C gives this verse after st. 47.

८ C. कुंदः कदंबः स्यात्. ९ A. भूमि°. १० C. °थाजिरे.

[१]पिण्डेऽर्थे कितवे द्यूते दुरोदर इति श्रुतिः ।
दीप्तौ दृष्टौ च तारासु ज्योतिःशब्दोऽभिधीयते ॥ ४३
[३]रोगार्त्तभाग्यमूढाल्पा मन्दाः प्रोक्ता विचक्षणैः ।
शास्त्रं प्रमाणमिच्छन्ति स्थितिहेतुं च कोविदाः ॥ ४४
[४]हरिणः पाण्डुरो वर्णः कुरङ्गो हरिणो मतः[५] ।
करटः कां[६]तरो ज्ञेयः करटो ध्वाङ्क्ष उच्यते ॥ ४५
कं[७]ङ्करेट्टुः स्मृतो गृध्रः कं[७]ङ्करेट्टुरमर्षणः ।
प्रा[८]ध्वं बन्धनमिच्छन्ति प्राध्वं प्रध्वं च सूरयः ॥ ४६
सौधावयवविज्ञानगमनेषु कला मता ।
[९]तुषारः क्षुद्रपाषाणस्[१०]तुषारस्तुषवेणिषु ॥ ४७
मणिः कोलिंजरो ज्ञेयो मणिको मणिरेव च ।
विषं पानीयमित्युक्तं विषमन्तकरो रसः ॥ ४८
वाजमन्नं गरुद् वाजो[११] वाजं पीयूषमिष्यते ।
व्रजो गोष्ठो[१२] व्रजो मार्गो व्रजः संघो व्रजो गणः ॥ ४९
वीर्यं शुक्रं बलं वीर्यं वीर्यं बीजमुदाहृतम् ।
नक्षत्रस्य मघा नाम कु[१३]न्दस्य कलिका मघा ॥ ५०
द्विजिह्वः सूचको ज्ञेयो द्विजिह्वस्तु भुजंगमः ।
विज्ञेयं शयनं शय्या शय्या पुस्तकसंचयः ॥ ५१
तरसं मांसमाख्यातं तरसं बलमुच्यते ।
वारुणी मदिरा ज्ञेया पश्चिमा दिक्[१४] [च] वारुणी ॥ ५२
मन्दुरा वाजिशाला स्यादावासो[१५] च मन्दुरा ।
सूनृतः शिक्षितो मर्त्यः सूनृतः सत्यवाक् स्मृतः ॥ ५३
[१६]कीकसो वानरोऽभि(पि) स्[१७]यात् कीर्यते चास्थि कीकसम् ।
रोमन्थः स्यात् पशूद्गारो रोमन्थः कीटवर्त्तनम् ॥ ५४

---

१ C omits this verse. २ B व्यतिरे(?). ३ C omits this verse.
४ C gives this line after the second line of st. 46.
५ B. °णः स्मृतः । ६ C. सरटो. ७ B. कंकारंटुः
८ C gives this line before the first line of st. 45.
९ C. सुषारः. १० C. णः सु°. ११ B. वाजं. १२ B. गोष्ठं.
१३ C. पुष्पस्य. १४ C. दिशि. १५ B. C. °सोऽपि.
१६ C gives this verse after the next one. १७ B. °ऽभिक्षः.

[1]हरिद्रा रजनी प्रोक्ता[2] रजनी च विभावरी ।
परिघः परिघातः स्यात् परिघो दण्ड इष्यते ॥ ५५
[3]धरा पृथ्वी धरा धारा धरः शैलो धरा धृतिः ।
[4]क्रतौ क्रोधे तथा दैन्ये मन्युशब्दः प्रचक्ष्यते ॥ ५६
[5]सरलो देवदारुश्च सरलः सरलो मतः ।
बहुलाः कृत्तिका ज्ञेया गावश्च बहुला मताः ॥ ५७
[6]मूलः पुद्गलकः कन्दः कन्दो वारिजं[7] उच्यते ।
[8]मानदण्डनयोर्निष्को निष्को दीनाररुक्मयोः ॥ ५८
करो हस्तः करो रश्मिः करः कर्षकशोधनम् ।
[9]द्वन्द्वे दुन्दुभिरक्षेषु दुन्दुभिः स्यात् तथानकः(के) ॥ ५९
[10]ख्यातं विपिनमुद्यानमुद्यानं ग[11]मनं मतम् ।
उपर्यभ्यधिके प्रस्थे विदुरग्रं विपश्चितः ॥ ६०
निवृत्तावभिधेयेऽर्थो धने चोक्तः प्रयोजने ।
वर्द्धनी वार्[12]घटी (?वा घटी) प्रोक्ता वर्द्धनी तृणकूर्चिका[13] ॥ ६१
कुङ्कुमं रुधिरं प्रोक्तं[14] रुधिरं क्षतजं मतम् ।
नन्दनः स्व[15]समः पुत्रो नन्दनं शक्र[16]काननम् ॥ ६२
[17]मानसं चित्तमित्युक्तं मानसं त्रैदिवं सरः ।
धावनं शो[18]धनं प्रोक्तं धावनं शीघ्रव[19]र्त्तनम् ॥ ६३
[20]स्यन्दनाख्या द्रुमस्रावे स्यन्दनो रथ उच्यते ।
तु[21]रायणमसंगोक्तिः क्रियाहीनै[22]स्तुरायणः ॥ ६४

---

१ cf. p. 15, n. 16. २ B. C. ज्ञेया.

३ C gives this line after st. 57 and construes it with the first line of st. 58. ४ C omits this line.

५ C omits this verse. B omits this line.

६ cf. n. 3 above. ७ B. वारिद.

८ cf. st. 18 above B. C omit this line. ९ A. दण्डे; B. द्वन्द्वो.

१० C. प्रोक्तं. ११ C गगनं. १२ C. वार्धनी. १३ B °कर्णिका ॥

१४ C. चोक्तं. १५ C. सुनयः प्रोक्तो १६ C. सच(?)कीर्तनं.

१७ C omits this verse. १८ B. साधनं. १९ B. °मुच्यते.

२० C. चंदनाख्यो देववृक्षश्चन्दनो. २१ C. परा°. २२ C. °नः परा°.

परायणं रिपुस्थानं तत्परश्च परायणः ।
करिपृष्ठे कुले वेणौ वंशाख्या कविभिर्मता ॥ ६५
जटाजूटे शिखण्डोक्तिः कलापे च शिखण्डिनः ।
शिष्टभाजनदेहेषु पात्रशब्दः प्रचक्ष्यते ॥ ६६
पादत्राणे दले पक्षे लेख्यवस्तुनि पत्र-वाक् ।
द्रव्येऽसिपरिधानेऽपि क्रियापानेऽपि कोश-वाक् ॥ ६७
हंसेऽग्नौ गरुडे चन्द्रे द्विजराजे इति ध्वनिः ।
कैवर्त्तेऽपि च कैवर्त्तः कैवर्त्तः सलिलेचरः ॥ ६८
पिप्पलाख्या जलास्वच्छवस्त्रकर्त्तनवस्तुषु ।
चन्द्रमाश्चन्दनो ज्ञेयश्चन्दनं मलयोद्भवम् ॥ ६९
सकला व्रीहयः सस्यं विज्ञेयाः सस्यमिक्षवः ।
द्वषद्यरण्यसस्ये च कुरुविन्द इति श्रुतिः ॥ ७०
करवीरश्च मारः स्यादङ्कुशः करवीरकः ।
करिणां बन्धनस्थानं वारि वारि जलं मतम् ॥ ७१
मधू(चु)रं भूरि विज्ञेयं भूरि काञ्चनमेव च ।
सूदः स्यात्सूपकारश्च सूदो ज्ञेयः कुरंटकः ॥ ७२
भेषको दुर्जनो ज्ञेयो भषकः सरमासुतः ।
सूतो भास्कर इत्युक्तः सूतः सारथिरुच्यते ॥ ७३
प्रतिरोधकस्तु चौरो दुर्जनः प्रतिरोधकः ।
सौवीरोऽश्मे(श्व)विशेषः स्यात् सौवीरं काञ्जिकं मतम् ॥ ७४

---

१ C gives this line later on (cf. n 19 below.) २ B. °भिः स्मृता ॥
३ C. कपालेषु which must be corrected into कलापेषु.
४ B. °ब्दं. ५ B. प्रचक्षते ; C. प्रवर्तते. ६ C रणे.
७ C. पक्षे°. ८ C. शिष्टपरीवारे. ९ B. °ने च. १० C °गमने.
११ C °ब्ध्वनिः स्मृतः । १२ C. तु १३ C. ध्वनिः १४ C. वारीणां.
१५ C. भूमिर्वि°. १६ C. भूमिः १७ B. °स्तु: १८ A, B. कुडुम्बिकः.

१९ C adds here परायणो रिपो सैन्ये तत्पतिश्च परायणः ॥ (cf. st. 65 above) and ends this मुक्तक just there. इत्यनेकार्थमंजर्यां द्वितीयः ॥ However, there is an Addendum at the end of the Ms., which gives st. 73-78 of this मुक्तक.

२० C. °बोध°. २१ C. °स्व°. २२ C. काञ्जिक.

दौर्मनस्यं घृणा प्रोक्ता घृणा च करुणा मता ।
भङ्गः पलायनं वीचिर्भङ्गो भङ्गश्च भञ्जनम् ॥ ७५
तीक्ष्णं तीव्रं समाख्यातं तीक्ष्णं लोहमुशन्ति च ।
मार्ग्गणो याचको ज्ञेयो मार्ग्गणो बाण उच्यते ॥ ७६
भृङ्गः शिलीमुखः ख्यातो नाराचोऽपि शिलीमुखः ।
भूशुण्डी सूकरः प्रोक्तो भूशुण्डी च कृषीवलः ॥ ७७
मृणालं बिसिनीमूलं मृणालं च जटीपली ।
काव्यास्तु पितरो ज्ञेयाः काव्यं ग्रन्थनिबन्धनम् ॥ ७८
ह्रस्वदीर्घप्लुते [1]ध्वानः कृतपित्तव्यथास्वपि ।
रुक्मं हेम विजानीयाद् रुक्मं रजतमुच्यते ॥ ७९
उत्पलं नलिनं प्रोक्तमुत्पलं कुष्ठमौषधिः ।
[2]वाँसुरा व[3]सँती ज्ञेया [4]वाँसुरा वलभी मता ॥ ८०
रजतं कलधौतं स्यात् कलधौतं च काञ्चनम् ।
वर्णः कृष्णोऽच्युतः कृष्णः प्रोक्ता कृष्णा च पिप्पली ॥ ८१
[5]समवाये यमे देवे संयद्वर इति श्रुतिः ।
शर्व्वरश्चन्द्रमा ज्ञेयः शर्व्वरः शवरो मतः ॥ ८२
महिला रमणी ज्ञेया रमणी वेदिका मता ।
प्रधानं प्रकृतिः सांख्ये प्रधानं विदु[6]रुत्तमम् ॥ ८३
वक्त्रमप्यरविन्दं स्यादरविन्दं सरोरुहम् ।
शृगालो जम्बुको भीरुः शृगालो वरुणोऽपि च ॥ ८४
त्रिदशा मरुतः प्रोक्ता मरुतोऽपि समीरणः ।
[7]मायाशब्दो बुधैरिष्टः [8]स्थूलसत्त्वविशेषयोः ॥ ८५
कुण्डलं मण्डलं ज्ञेयं कुण्डलं कर्णभूषणम् ।
प्रतिबन्धः कुलाधारः प्रतिबन्धः खलक्रिया ॥ ८६
[9]किषिर्गोत्रविशेषः स्यात् [10]किषिः कालः [11]किषिः कपिः ।
[12]कुशिलोऽक इत्युक्तः [13]कुशिर्वैखानसो मुनिः ॥ ८७

---

१ B. °नः । २ B. वागुरा. ३ B. वारुणी. ४ B. वागुरा.
५ B interchanges the two lines of this verse.
६ A. °रमृतम् । ७ B. माला°. ८ A. सून्वद्यनविशेषतः (?) ।
९–११ The reading is doubtful. कपि is denoted by कीश.
१२ A. B. कृषि°. १३ A. कृषि°, B. किषि°.

वर्त्तिर्दीपशिखासूत्रं वर्त्तिर्नेत्राञ्जनोदिता ।
धूम्राटश्च कलिङ्गः स्यात् कलिङ्गो देशवाचकः ॥ ८८
शैले तृणविशेषेऽर्के नृषु [1]गेर्तुरिति ध्वनिः ।
[2]शेलुस्तृणविशेषश्च शेलुः श्लेष्मातको मतः ॥ ८९
[3]शैलः पर्वत आख्यातः शैलः शिलासमुद्भवः ।
वाल्मीकश्च [4]सीमिकैः[5] स्याद् वाल्मीको[6] वाग्विशारदः ॥९०
समाजः कुञ्जरो[9] ज्ञेयः समाजः समयो मतः ।
प्राँजिकः[7] पक्षजातिः स्यात् प्राजिका नीलमक्षिका ॥ ९१
सारसो लक्ष्मणः प्रोक्तो लक्ष्मणो राघवानुजः ।
[8]लक्ष्मणा औषधी प्रोक्ता कथयन्ति मनीषिणः ॥ ९२

इति शब्दरत्नप्रदीपेऽर्द्धश्लोकाधिकारो द्वितीयो[10] मुक्तकः[11][12] ॥

---

१ B. मंमुदिति. Both readings are doubtful.
२–३ B omits these lines.
४ A. समीकः ५ B °को वा. ६ B. समीको वा वि°.
७ A. प्राजितः ८ B omits this line. ९ A omits.
१० B. C. °यः ११ B. कांडः, C omits. १२ B adds समाप्तः

[1]इतः प्रभृत्यनेकार्था ज्ञेयाः प्रत्यंहि [2]सूरिभिः ।
राजा चन्द्रो नृपो राजा पयः क्षीरं पयो जलम् ॥ १
मित्रो भानुः सुहृन् मित्रं दरं छिद्रं दरं [3]भयम् ।
[4]ओघः पूरोऽथ वेगश्च वनं काननमम्बु च ॥ २
[5]इला भूमिर्मता गौश्च संज्ञा चित्तं च नाम च ।
[6]शैलोऽद्रिरंशुमानद्रिर्भा भानुर्भानुरर्यमा ॥ ३
श्रीकण्ठः स्थावरः स्थाणुः हय(?र)च्छागाच्युता अजाः ।
गोविन्दो हरिगोसंख्ये शिवः कृष्णो वृषाकपिः ॥ ४
शरीरोत्सेधयोः कायः सन्धावधिप्रतिज्ञयोः ।
तेजः पुरीषयोर्वर्चो वसतिः स्थाने[10]नक्तयोः ॥ ५
सरित्समुद्रयोः सिन्धुः [11]शालः प्राकारवृक्षयोः ।
चातकापत्ययोः स्तोकः पापव्यसनयोरघः ॥ ६
पिपासालोभयोस्तृष्णा भुवनं तोयलोकयोः ।
[12]मद्याश्वमेधयोः[13] काश्यो वा[14]डवो ह्यग्निविप्रयोः ॥ ७
निस्त्रिंशौ खड्गपापिष्ठौ भृङ्गबाणौ शिलीमुखौ ।
[15]मौनमण्डने निष्कौ स्तो बाष्प उष्मा तथाश्रु च ॥ ८
वृक्षजातिगजौ पीलू प्रदरौ रोगमार्गणौ ।
[16]सूकरोष्ट्रौ च करभौ हावौ [17]क्रन्दनविभ्रमौ ॥ ९
[18]वेनवह्नयनलौ दावौ जीमूतौ मेघपर्वतौ ।
वल्लवौ सूदगोपालौ चिकुरौ केशचञ्चलौ ॥ १०

---

१ B. अत: २ B. वेदिभिः ३ A. गृहम्.

४ C gives this line along with the two succeeding lines later on. cf. n. 12 below. ५ cf. n. 4 above. ६ B. °मिः स्मृता.

७ A. cf. n. 4 above. ८ C. °गश्च उच्यते ।

९ C omits. १० B.° कूपयोः । ११ B. सालः

१२ C gives the three lines mentioned in n. 4 above, between the two lines of this verse

१३ C. मद्यमध्यमयोः । १४ °वश्चाग्नि°. १५ B C omit this line.

१६ C gives this line and the succeeding one after the first line of st. 11. १७ A. स्कन्दन°. १८ cf. n. 16 above. C. वनवह्नपत्यग्नि(?न)लौ.

अरिष्टपिष्टकौ कल्कौ वृषौ[2] दानववैरिणौ ।
[3]पङ्गुपद्मारुणौ श्रोणावम्बरौ व्योमवाससी ॥ ११

उदाना[4]ख्यौ मरुद्बन्धौ [5]निस्रंसौ वटदुग्धिलौ ।
[6]ध्वाङ्क्षः काको बको ध्वाङ्क्षो नगः शैलो नगो द्रुमः ॥ १२

खटो ह्रस्वः खटः क्रूरः क्षितिः पृथ्वी क्षितिः क्षयः ।
क्षेयं गेहं क्षयो ह्रासः श्रमः खेदः श्रमः क्रिया ॥ १३

कण्ठो विधिर्गलः कण्ठः प्रहिः कूपः प्रहिः सरः ।
[7]उन्दुरे सूकरे कोलः कलिः कलहकालयोः ॥ १४

शशाङ्कस्वर्णयोश्चन्द्रः किरिः सूकर[9]लोहयोः ।
बर्हिर्दर्भौ[10] जलं [11]बर्हिर्लाङ्गलं हलमम्बु च ॥ १५

निमित्तहृदये हेतू [12]हीरौ वज्रमहेश्वरौ ।
काश्मीरकशुकौ कीरौ वीरौ विक्रमबान्धवौ ॥ १६

कौशिकौ वासवोलूकौ [13]सायकाविषुमार्गणौ ।
[14]मार्गणो याचको बाणो मार्गणं मृगमांसता (?) ॥ १७

[15]ध्वान्ताचलौ मतावन्धौ मयूराग्नी शिखण्डिनौ ।
[16]कमरः[17] कोमले [18]काम्ये [19]समरो [20]युद्धसंघयोः ॥ १८

---

१ C adds मयोष्ट्र(? ऽश्वः) करभः प्रोक्तो लक्ष्मीर्मा च प्रचक्ष्यते ।
कं पानीयं जलं प्रोक्तं नीहारं हिम उच्यते ॥ २ A. वृशौ.

३ पङ्गु is denoted by श्रोण, not by श्रोण.

४ A. [उ]दाना°, C. उदना°. उदान is a kind of मरुत्, but बन्ध is denoted by उद्दान, not by उदान. ५ C. कामं शक्रशरासनम् ।

६ C interchanges this line with the second line of the next verse.

७ cf. n. 6 above. A. B. वराहे. C. उन्दिर(?)रे. ८ C omits this line.

९ A. °कोलयो: १० B. °बर्हो°, C. °दर्प्तो. ११ B. C. वह्नि°.

१२ C. हरौ. १३ C. सर्पिकौ(!) वर्षि°(?). १४ B C omit this line.

१५ C. ध्वांतावतौ(?) च व्याधौ च शिखिनौ वह्निपावकौ । A. B. मतौ वन्ध्यौ

१६ C gives this line after st. 20. Cf n. 4 on p. 22.

१७ A. कसरः, B. कमलं, C. शूकरः १८ C काव्यो(?).

१९ C. समयो (?) २० B. सन्धियुद्धयोः, C. बन्धसोमयोः (?)

[1]उत्सङ्गे सूकरे क्रोडो वत्सः स्व(? त)र्णकपुत्रयोः ।
कान्त्यनातपयोश्छाया दया हिंसानुकम्पयोः ॥ १९
द्रुमो वृक्षे पुराणेऽन्ये ध्रुवो निश्चितनित्ययोः ।
संघाते पूरणे पूरः सूरः सूर्यनरेन्द्रयोः ॥ २०
[3]धीरौ सात्त्विकधीमन्तौ वरौ श्रेष्ठहुताशनौ ।
पतङ्गौ शलभादित्यावर्कौ स्फाटिकभास्करौ ॥ २१
गुह्यं कार्ये च कौपीने संज्ञे स्तो नामचेतने ।
मधुरौ च प्रियस्वादू शम्भू ब्रह्ममहेश्वरौ ॥ २२
कार्यरिद्धौ तथा कृत्यौ बभ्रू नकुलपिङ्गलौ ।
स्पष्टप्राज्ञौ स्मृतौ व्यक्तौ दीप्तिः स्वेच्छा तथा रुचिः ॥ २३
नित्यं स्वं च निजं प्रोक्तं बलदीप्तौ तथौजसी ।
हायनं वर्षमोजश्च हेती शस्त्रार्चिषी मते ॥ २४
आशासंज्ञे ककुप्तृष्णे स्तनमेघौ पयोधरौ ।
अभिरूपं बुधे कान्ते जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ॥ २५
उदयाधिगमौ प्राप्ती वह्निसूर्यौ विभावसू ।
वृजिनं मलिने पापे प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः ॥ २६
असन्मायाविनौ लीकौ वीर्यौद्यमौ पराक्रमौ ।
वराके मूषके दीनः प्लवकः कपिभेकयोः ॥ २७
यज्ञः पूजा च दानं च इष्टिभी(?री)क्षौ तथा मते ।
चीवरं वल्कले वस्त्रे कृष्णं काले तथोदरे (?) ॥ २८

१-२ C gives these verses after the first line of st. 21, where they read as follows :

C. वलांगः(?) सूकरक्रोडौ वत्सस्वकर्ण(!)पुत्रकौ । कान्त्यनातपशा(?) छाया दया हिंसानुकंपयोः ॥
...मो वृक्षेषु रत्नेषु [ध्रु]वो निश्चितनिश्चयो(?)ः । संघाते पूरणे पूरः शू(?सू)रः सूर्यनरेश्वरः(?)॥

३. C. वीरौ.

४ C gives st. 19-20 here and the second line of st. 18 thereafter. This marks the end of this canto, expressly stated as इत्यनेकार्थरत्नतृतीयोऽध्यायः ।

५ B. कनक°

६ The reading in B is not legible. लीकौ here seems to be intended for अलीकौ.

७ B. भीरुः

८ B प्लवः कपिक°

९ A. B. ध्रुतौ (!).

१० B. चीवरो.

[१]श्रोत्रश्च श्रवणे कर्णे तातस्तु पितृपुत्रयोः ।
कुट्टिमे शफरे मत्स्यो रूपं मूर्तौ विदुर्विधौ[२] ॥ २९
[३]अवटौ कालगर्तौ च निमित्ते हेतुर्[४]लक्षणे ।
हिते शक्ते समर्थः स्यात् प्रशान्त(?न्ता)कठिनौ मृदू ॥ ३०
स्थूलौ जडबृहन्तौ [च] विप्राश्च दशना द्विजाः ।
असदप्रियावलीकौ सहायप्रणिधी [५]मतौ ॥ ३१
[६]रचितोऽयमनेकार्थो यथास्मृति [च] युक्तके तृतीयेऽपि ।
[७]उपजयतां सौभाग्यं पठतां श्रद्धावतामनिशम् ॥ ३२
[८]इति [९]शब्द[रत्न]प्रदीपे [पादाधिकारः] तृतीयो[१०] मुक्तकः[११] ॥

---

१ A. B. नौजुष्ट.° २ A. °वृके. ३ A. अवयौ. ४ B °लक्ष्मणे.

५ The reading is doubtful. It represents the main word, given in nom. dual. ६ B adds अत्रार्या before this verse.

७ उपजीयात् ? Or उपजायतां सुभाग्यं ? ८ B. C. इत्यनेकार्थः ९ B. C. omit.

१० B. °थः ११ B. कांडः, C. °ऽध्यायः १२ B adds समाप्तः

चतुर्थो मुक्तकः ।

यो जयेद् राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः ।
पृथ्वीं प्रशास्ति यस्याज्ञा स सम्राडभिधीयते ॥ १

[2]सबुद्धिः सचिवो राज्ञस्तन्मन्त्रं निश्चिनोति यः ।
नियुक्तः कर्म्मणि प्राज्ञः स कर्मसचिवो मतः ॥ २

यो रा[3]जरक्षवर्ग्गः स्यात् सोऽनीकस्थो निगद्यते ।
अन्तःपुरे येऽधिकृतास्तेऽन्तर्वेश्मिकसंज्ञकाः ॥ ३

[4]यथार्थयुक्तस्तु चरः प्रणिधिः प्रणिगद्यते ।
एष ग्रामाधिकृत्यश्च स्थायुष(?कः) पुरुषो मतः ॥ ४

षण्ढो वर्षधरः प्रोक्तो द्यूताध्यक्षश्च सारिकः ।
विषयानन्तरं शत्रुर्मित्रं च तदनन्तरम् ॥ ५

यो लक्ष्याच्युतबाणः स्यात् सोऽपराद्धेषुर्भण्यते ।
कलिविन्यसनं व्यूहो वाज[ः] पक्षो भवेदिषोः ॥ ६

प्रत्यासारं विदुः प्राज्ञाश्चमूजघनमाहवे ।
प्रत्यरि सेनागमनं जानीयादभिषेणक(?न)म् ॥ ७

तुरङ्गरथपत्तीभं सेनाङ्गमभिधीयते ।
स्यात् प्रतिसर आरण्यः प्रतिरोधः समापेनम् ॥ ८

वृत्ते वर्त्स्यति वा युद्धे पानं स्याद् वीरपानकम् ।
चापध्वनिश्च विस्फारः कबन्धमशिरो वपुः ॥ ९

निबन्धनं मेखलाद्यैर्मङ्गस्य ग्रहणं स(?द)मः ।
वरूथो रथगुप्तिश्च गुल्मं सञ्जनमिष्यते ॥ १०

पुरुषो रिपुयुक्तो यः उ(?अ)पसय्य(?र्प्प)ः स भण्यते ।
तदभिभयमाख्यातं सबलाद् भयमेव यत् ॥ ११

१-२ B interchanges these two verses.
३ B. राजा. ४ It must be चरो यथार्थयुक्तस्तु
५ A. पुरुषोत्तमः ६ A. °गाध्ये°, B. °राधे° ७ A. षेणा°, B. क्ष्वेमा°.
८ B. परिसेधः ९ A. °पना ॥ १० A °कृ°, B. °र्थ मत्कस्य.
११ B omits this verse.

विषलिप्तफलो बाणो यः स दिग्धे इति स्मृतः ।
दुरापेऽपि च कृत्ये यः स्यादनैव[3]स्थितक्रियः ॥ १२
महोत्साहः स विज्ञेयः पुरुषः कृतनिश्चयः ।
बृंहितं स्तनितं प्रोक्तमालानं बन्धनं मतम् ॥ १३
मदो दानं गजेन्द्राणां वमथुः[4]करिसीकरः ।
दन्तान्तप्रतिमानं च सृणिरुक्तस्तदङ्कुशम् ॥ १४
बिन्दुजालं शरीरोत्थं पद्मं विज्ञाः प्रचक्षते ।
आधोरणो नियन्ता स्यान् निषादी प्राजिता गजी(?) ॥१५
आजानेयः कुलीनोऽश्वः [5]पोतः प्रोक्तः किशोरकः ।
काम्बोजश्चैव बाल्हीकः साधुवाही विनीतकः ॥ १६
प्रोथं घोणान्तरं प्राहुर्द्वैरितं वलितं मतम् ।
अश्वकाङ्गः स्मृतो वाजी मृगयायां विचक्षणः ॥ १७
चक्रं चापस्करं विन्द्यात् कूबरं युगमध्यगम् ।
श्रेयमिष्टफलं दैवं तद्विपर्यासतोऽनयम् ॥ १८
इष्टार्थानर्थयोर्दूराद् दीर्घदर्शी इति स्मृतः ।
[9]वेहद् वृषोपगा गौः स्यादुत्तमा नैचिकी मता ॥ १९
काल्याऽथ सर्व्यप्रजने समाना च सवर्णिका ।
दुह्यमानाप्यसंदाना सुव्रतेति निगद्यते ॥ २०
दोहकाले पयोहीना संधिनीति विधीयते ।
प्रौढो वत्सो वत्सतरः प्रष्ठौही गर्भिणी मता ॥ २१
विद्याद् दध्यघनं द्रप्सं [10]घृतं सर्पिर्निशान्तरम् ।
हैयङ्गवीनमित्युक्तं नवनीतं विचक्षणैः ॥ २२
समा गिरेः क्षितिः सानुरधःस्थानादुपत्यका ।
परं तीरं विदुः पारमर्वागवारमावचुः ॥ २३

१ B. विष.   २ B omits.   ३ A. °प्रतिक्रिया ।
४ A. कर°.   ५ A. पासिताप्रजः, B. सासितप्रतः
६ B. स विज्ञेय[:] किसेवकः   ७ B. स्मृतिः   ८ A. वृ.
९ B. सावधेनुर्नि°.   १० A. रतं, B. हतं.   ११ B. सर्पिः प्रयानकम्.
१२ A. °परमावचः, B. °परमेवचः

राजहंसाः सिता रक्तैर्मल्लि[1]नैर्मल्लिकाभिधाः ।
विश्रुताश्चरणैर्हंसा धार्तराष्ट्राः सितेतरैः ॥ २४
मध्यं प्रकोष्ठमित्युक्तमरत्निमणिबन्धयोः[2] ।
कनिष्ठामणिबन्धान्तः करभः करपार्श्वगः[3] ॥ २५
ज्येष्ठा कनिष्ठा निकटे तत्प्रदेशिन्यनामिका ।
बाहोश्च प्रसृताङ्गुल्योरन्तरं व्याम उच्यते ॥ २६
प्रादेश–ताल–गोकर्ण–वितस्तय उदाहृताः ।
तर्जन्यादिभिरङ्गुष्ठे वितताभिः [4]क्रियापरैः[5] ॥ २७
प्रसारिताङ्गुलिः प्राज्ञैः करः प्रतलमुच्यते ।
कृतमुष्टिः स रत्निः स्यादरत्निर्विंतताङ्गुलिः ॥ २८
पुच्छं प्रकीर्णकं सिक्तं कल्यं मद्यं चिरोषितम् ।
चतुर्विधं स्मृतं वस्त्रं त्वग्युक्तं[6] कृमिरोमजम् ॥ २९
महाधनाख्यमित्युक्तं बहुमूल्यं विचक्षणैः ।
पौष्पं मधु [7]मकरन्दं गुल्मस्थं स्तबकं बुधैः ॥ ३०
बन्धनं वृन्तमिच्छन्ति विटपं तरुविस्तरम् ।
संभाविताऽस्मिका(? ता) दर्पादाहोपुरुषिका मता ॥ ३१
फलं सुस्वादु पक्वं स्यात् [8]पदं(?)[9] पुष्टमुच्यते ।
जातौ जातौ यदुत्कृष्टं तद्रत्नमभिधीयते ॥ ३२
[10]वाक्यं पदसमूहः स्यादौह्येसाध्यमकारणम् ।
लुप्तवर्णपदं ग्रस्तं निरस्तं त्वरितोदितम् ॥ ३३
नितान्तं मधुरं सान्त्वं परुषं निष्ठुरं वचः ।
असङ्गाष्यं बहुभाष्यमसंबद्धं निरर्थकम् ॥ ३४

---

१ A. °लिना°. २ B. °योः ३ A. कृपा°. ४ B. °रैः ५ A. तिस्थं, B. °वथं.

६ According to this reading only three types are specificd, one type (viz. फालं) being left out. Hence the reading may be amended as त्वक्–फल–कृमि–रोमजम्. (cf. त्वक्–फल–कृमि–रोमाणि वस्त्रयोनिः in Amara-Kos'a, II, 6, 110.) ७ B. करं दण्ड.

८ B omits the last three quarters of st. 32 as well as the first quarter of st. 33, and construes the first quarter of st. 32 with the second quarter of st. 33. ९ May it be प्रदं ?

१० B replaces the first quarter of this st. by that of st. 32. (cf. n. 8 above.) ११ The reading seems doubtful.

कल्या कल्याणवाचोक्ता सत्यकल्पा प्रियाप्रिया ।
पूर्वापरोक्तमक्लिष्टं[1] हृद्गतं स्वगतं मतम् ॥ ३५
[2]स्पष्टं चित्रपदं नाम ग्राम्यमश्लीलमुच्यते ।
काञ्चनं रजतं[3] प्रोक्तं हिरण्याख्ये कृताकृते ॥ ३६
आहते च स्मृते रूप्ये ततोऽन्यत् कुप्यमुच्यते ।
भूषणं कनकं शृङ्गी गवाद्यं पादबन्धनम् ॥ ३७
वेश्यावासोऽपि वेशः स्यादातोद्यं मुरजादिकम् ।
अर्थप्रयोगमाचार्याः कुशीदं परिचक्षते ॥ ३८
वार्द्धुषिक्यं च तद्वृत्तिस्तत्क्रिया च विकूणिका ।
स्यातां ग्राहकदातारावधमर्णोत्तमर्णकौ ॥ ३९
कुमुदः प्रतिभः श्वेतो बभ्रुः कनकपिङ्गलौ ।
रक्तश्यामः स्मृतो धूम्रः पिशङ्गो [4]रोचनाप्रभः ॥ ४०
मेचकः शिखिकण्ठाभो हरित् श्यामोऽसितासितिः ।
आरक्तः पाटलो वर्णः शोणः कोकनदारुणः ॥ ४१
आसारो वेगवान् वर्षः प्रावृडम्भोधरागमः ।
शीकरः पवनास्ताम्बु मेघाग्निः स्यादिरम्मदः ॥ ४२
वृष्ट्या संभूतशस्यो यः स देशो देवमातृकः ।
नद्यम्बुवृद्धशस्यो यः स नदीमातृको मतः ॥ ४३
वरपूर्वा तु या नारी सोच्यते दिधिषूरिति ।
सोऽग्रेदिधिषुराख्यातः पुरुषस्तत्पुरन्ध्रिकः ॥ ४४
खगा मृगाः स्मृताश्छेकाः सर्वदैव गृहे रताः ।
यदुष्ट्रिकादिकं[6] भाण्डं तदेवाऽऽवपनं मतम् ॥ ४५
रजतादिकृतं तत् स्यात् भृङ्गारं जलदायकम् ।
अवकेशी फलैर्वन्ध्यः सर्वलोहं च तैजसम् ॥ ४६
व्याख्याता भैक्षदाता च प्राज्ञैश्च विकुलाविति ।
स्थानं मूलादधिष्ठानात् शाखानगरमुच्यते ॥ ४७
संसप्तकाश्च समये संग्रामादनिवर्त्तिनः ।
[9]पद्याऽतः पथसंबन्धो गव्यूतिः क्रोशकद्वयम् ॥ ४८

---

१ °श्लेषं. २ B. स्पृ°. ३ A. °ते. ४ B. च(?क)नक°. ५ A. °वर्षः स्यात्.
६ B. धनं (?) ७ B. तरु°. ८ B. °तो दाता. ९ B. ञ° (?)

आगन्तुवर्तमानाभ्यां सहाहोभ्यां च पक्षिणी ।
श्रुतिविद्भिः स्मृता रात्रिः पुण्या हवनकर्मणि ॥ ४९
चिररात्रमिति ख्यातं चिरकालं च सूरिभिः[1] ।
गणरात्रं तथा रात्रिर्बहुशश्चाभिवासिता[2] ॥ ५०
तत् शल्लीकमाख्यातं प्रच्छन्नं शल्लैरपि ।
अन्तर्गतास्थिकं कुड्[3]यमेडूकं कवयो विदुः ॥ ५१
[4]पञ्चरागिकवस्त्रेण निर्मिताः पुत्रिकास्तु याः ।
पञ्चालिका इति प्रोक्ता बालक्रीडनकाश्च ताः ॥ ५२
सपरिच्छदकन्यायाः प्रदाता कू[5]कदो मतः ।
सोपप्लवस्थितो भानुरुपरक्तोऽथवा शशी ॥ ५३
पोगण्ड इति विख्यातो देहेन विकलः पुमान ।
मासौ द्वौ चैत्रवैशाखौ तावेव मधुमाधवौ ॥ ५४
ज्येष्ठाषाढौ तथैव द्वौ प्रोक्तौ शुक्रशुची इति ।
नभः श्रावण इत्युक्तो नभस्यस्तदनन्तरः[6] ॥ ५५
इषोर्ज्जाविति विज्ञेयौ मासावाश्विनकार्तिकौ ।
स्यातां सहःसहस्यौ द्वौ मार्गपौषौ यथाक्रमम् ॥ ५६
तपस्तु माघ इत्युक्तस्तपस्यः फाल्गुनो मतः[7] ।
एकसर्गजनं विन्द्यादेकायनमिति [8]स्फुटम् ॥ ५७
अनेडमू[9]क इत्युक्तः श्रोतुं वक्तुं च यः क्षमः ।
समरात्रिदिनं कालं विषुवन्तमुशन्ति च ॥ ५८
वात्या वातसमूहः स्यादिल्वला मृगतारकाः ।
राकानुमतिराचा[10]र्याः पौर्णमासीद्वयं विदुः ॥ ५९
राका संपूर्णचन्द्रा स्यात् कलोनाऽनुमतिः स्मृता ।
[11]शिनीवालप्रमाणोऽर्कसांनिध्ये यत्र चन्द्रमाः ॥ ६०
दृश्यते सा त्वमावास्या शिनीवालीति भण्यते ।
कुहे(? हि)ति कोकिलाध्वाने कलामात्रं विधौ स्थितिः ॥ ६१

---

1 B. मनीषिणैः २. B. °र्बहुलश्चासितासितम् (?) ३ A. °ण्डय°.
४ Before this line B adds लोकोऽयं भारतं वर्षं पूर्णस्यादामुषामता(?) ।
५ A. स्ककुदो. ६ B. °रम्. ७ B. °नः स्मृतः । ८ B. स्मृतम्.
९ B. °कश्च. १० B. °ख्याता. ११ A. शि(सि)ता°, B. सिनी°

यत्रोपि स्यादमावास्या नष्टचन्द्रा कुहूरिति ।
ऋचो यजूंषि सामानि कर्मविद्या त्रयी मता । ६२
आन्वीक्षिकी तर्कविद्या वार्त्ता कृष्यादि कर्मभाक् ।
समग्रमर्थशास्त्राणि दण्डनीतिरितीष्यते ॥ ६३
मन्वादिर्धर्मशास्त्राणि स्मृतयः स्मरणादपि ।
ऋग्यजुषोरधीती यः स होताऽध्वर्युरिष्यते ॥ ६४
सान्नाय्यं हविरेव स्यादुद्गाता सामतो मतः ।
आषाढो व्रतिनां दण्डः सोमपीथीति सोमपः ॥ ६५
स्वसंस्काराद् द्विजो भ्रष्टो व्रात्य इत्यभिधीयते ।
त्यक्ताग्निर्वीरहा प्रोक्तो दीक्षितो मखसोमपः ॥ ६६
यजमानः स्मृतो यष्टा हुताग्नौ च वषट् कृतम् ।
इष्टापूर्तं[11] ध्रुवं[12] [13]दानमन्यत् पूर्वमुदाहृतम् ॥ ६७
ब्रह्मस्वाध्यायसंवृत्तिर्ब्रह्मचर्यं समिष्यते ।
अभिमन्त्र्य हुतं सम्यग् विन्द्यादुपाकृतं पशुम् ॥ ६८
अन्वाहार्यं विदुः श्राद्धं मासिकं विधिकोविदाः ।
दर्शस्त्वेवंसितपक्षान्ते सदस्या विधिदर्शिनः ॥ ६८
[15]दिव्यः स्यादिति सत्रस्य शेषं प्राज्ञैरुदाहृतम् ।
सिद्धश्चाष्टगुणैर्युक्तस्त्रिवर्गो धर्मपूर्वकः ॥ ७०
प्राचीनावीती विख्यातः सत्यपाणौ समुद्धृते ।
हव्यं दैवे विधातव्यं पैत्रे कव्यमिति स्मृतम् ॥ ७१
योषिद् मुख्या वरारोहा वीरा स्यात् पतिपुत्रिणी ।
प्रसाधनज्ञा स्ववशा सैरन्ध्रीति निगद्यते ॥ ७२
कात्यायन्यर्द्धवृद्धा च सा राजवरवर्णिनी ।
मध्यस्थानं भ्रुवोः कूर्चस्तारकाऽक्षिकनीनिका ॥ ७३
स्त्रीणां पूर्वकटीभागं जघनं कोविदा विदुः ।
नितम्बमपरं भागं गुल्फं पादस्य पूर्वतः ॥ ७४

१ B. °त्र सा. २ A. °र्व°, B. °स्या°. ३ A. °र्व°. ४ B. °दिभिः
५ A. °पाणी(? नी)°, B °पी[थी]°. ६ A. °दिना. ७ A. न°.
८ B. नष्ट°. ९ A. तप्र(? दि)ष्टे. १० B. °ती ११ A. °थं.
१२ A. °व°, B. °वो. १३ A °नादं ह्मात् १४ A.B. °स्या°.
१५ B omits this line. १६ A. त्व°.

मुखान्तरालमाख्यं स्यात् पूर्वे संधिश्च लक्षणे ।
दृष्टे यत्र प्रसीदन्ति नयनानि मनांसि च ॥ ७५
प्रासादः स तु विज्ञेयः सौधः स्यात् श्नुधया सितः ।
मन्त्रोद्धारविधानज्ञः क्रियाकाण्डविशारदः ॥ ७६
आचार्यः प्रोच्यते सम्यक् स्वाम्नायेन च आचरन् ।
उपेत्याधीयते यस्माद् वाङ्मयं समुपागते ॥ ७७
उपाध्यायः स विज्ञेयो वृत्तिमात्रोपजीवकः ।
उपमर्दाग्निवैमल्याः तण्डुलाः पाकयुक्तितः ॥ ७८
प्रमाथितेन ते मन्दाः क्लिन्नत्वादोदनः स्मृतः ।
मुद्गादिदलप्रस्विन्नाः स्वच्छाः स्वपस्निमाययोः(?) ॥ ७९
प्राच्यादीनां दिशां देवाः पालनाद् विदिशामपि ।
दिक्पाला इति विख्याताः शक्रवह्नियमादयः ॥ ८०
पाञ्चजन्यं विदुः शङ्खं हरेश्चक्रं सुदर्शनम् ।
कौमोदकी गदा शार्ङ्गं कार्मुकं नन्दकस्त्वसिः ॥ ८१
[4]शिवस्य समिध्या(?) वारिस्वशब्दं स्थिरमेव च ।
शिवगङ्गेति विज्ञेया [5]दुष्प्रापा दुष्कृतात्मना ॥ ८२
नाम गोत्रं च मन्त्रं च या अभिव्यापकाः स्वयम् ।
सुनृणां काव्यपिण्डस्य विज्ञेयाश्चित्रधेनवः ॥ ८३
उत्पत्तिः प्रलयो वंशा मन्वन्तर-विनिर्णयः ।
वंशानुचरितं यत्र तत् पुराणमिति स्मृतम् ॥ ८४
नाम्ना येऽणादयः सिद्धाः समासविधिनापि ये ।
शब्दास्ते वाक्यतो धातोर्बोद्धव्याः कविपुंगवैः ॥ ८५
[7]मुक्तक एव चतुर्थो गुणभोग्यः [8]संनिवेशितः शब्दैः ।
वाक्यविबोध्यैर्नित्यं [9]नितरां [10]सुश्रूयते लक्ष्मीः ॥ ८६
[11]इति [12]शब्दरत्नप्रदीपे [13]चतुर्थो[14] [15]मुक्तकः समाप्तः ॥

---

१ B. °दुर्धे. २ A. °विचक्षणैः ३ A. °साधि°, B. °सातिनेमे.
४ A omits this line. ५ B. सुप्रापा सुकृतात्मना । ६ B. °तोःस्मर्तव्याः
७ B adds before this: 'आर्या ॥' ८ B. संनिधिशब्दैः ९ A. वितरतु.
१० A. सघुषं (?) वै. ११ B omits. १२ A omits.
१३ B adds श्लोकाधिकारः ' १४ B. °र्थं°. १५ B. काण्डः

पञ्चमो मुक्तकः ।

स्थानान्तरप्रधानत्वाद् व्यामिश्रा भवंतोऽपि च ।
साम्प्रतं पृथगुच्यन्तेऽनेकार्थवाचकाव्ययाः ॥ १
समुच्चये विकल्पोक्तौ व्यभिचारे व्यवस्थितौ ।
औपम्येऽतिशये हेतौ चकारोऽन्वाचयादिषु ॥ २
व्यवच्छेदे विवक्षायां विकल्पौपम्यहेतुषु ।
पक्षान्तरविनिर्णीतौ वा-शब्दः स्यात्समुच्चये ॥ ३
हि स्फुटे हा विषादोक्तौ हन्त निर्दिष्टबोधने ।
हासोपहाससंवित्तिभावसंबोधनादिषु ॥ ४
अहो साकल्यसाहित्यवृत्तिमात्रेषु दृश्यते ।
परं वा निश्चयेत्यर्थ-व्यवच्छेदकृतार्थयोः ॥ ५
पश्चात्सत्यवितर्केषु न परेति विनिश्चये ।
हर्षविस्मयखेदेषु बत-शब्दो निबध्यते ॥ ६
किल संख्याक्तौपम्यपूर्वसूचनहेतुषु ।
असंबुद्धौ निषेधे च वाक्यस्मरणयोरपि ॥ ७
अतिरक्तौ विषादे च न संबुद्धिनिषेधयोः ।
आमित्येवमतीते स्म मा स्म चेति निगद्यते ॥ ८
इतीव संभावनौपम्यपादपूरणहेतुषु ।
नु वितर्के द्रुतेऽह्न किमुत प्रश्नवितर्कयोः ॥ ९
उपहासे विषादे हि स्फुटानन्तरयोरुत ।
मिथोऽन्योन्यं ततश्चातः पुनः स्याच्च विनिश्चये ॥ १०
अन्तरेणान्तरा-शब्दौ व्यतिरेकोदितौ(?)[१०] विना ।
सुष्ठु प्रायः प्रगे प्रातः पुनरत्वर्थतथ्ययोः ॥ ११
अहर्मात्रणकाः (?) प्रोक्ता वैतथ्यार्थोद्धृता मुधा ।
अयीत्यामन्त्रणौत्सुक्ययुक्तिसंभावनादिषु ॥ १२

---

१ A व्याधिः सं°, B. °श्रं. २ A. °वि°. ३ A.° र्था चायं (?), B. °स्तुवाचकाः (?)
४ B. ताः ५ A. हे. ६ B. °गद्यते. ७ B. °स्तथा.
८ B. मिथ्याऽलीके मिथोऽन्योन्यं ९ B. न पुनर्ननु निश्चये । १० A. रिता°(?).
११ A. °ती! १२ B. प्रातु°. १३ B. °परस्परौ. १४ B. अन्हे/ आमं वणे (?)
१५ B. भ्रष्टतानुयोः (!)

अहो संभावनालापसंभ्रमामन्त्रणेषु च ।
अरे अनादराख्यायं स्थाने युक्तमितीष्यते ॥ १३
संभावने वितर्के च ए हे हाऽऽमन्त्रणे द्वयम् ।
नु संबुद्धौ(?) न्योन्यं नीवेद्यदि(?) समुच्चये ॥ १४
स्वीकारे ऊररी ऊरी उरी बोधनिषेधयोः ।
वायुश्च जवितो मङ्क्षु वै स्फुटार्थस्य संमतः ॥ १५
आहोस्विदथवेत्यर्थे आनन्तर्ये तथा अहो ।
आश्चर्यपदसंबुद्धिसंभावेषु निगद्यते ॥ १६
एवावधारणे जातु कदाचित् खलु निश्चये ।
मा निषेधे अभावे च दिष्ट्यानन्दे मृषाऽनृते ॥ १७
अतन्द्रातादि(?)शीघ्रार्थे अञ्जसा सहसा द्रुतम् ।
अथाऽऽनन्तर्यमाङ्गल्ये प्रश्नधिकारयुक्तिषु ॥ १८
संबुद्धौ च निषेधे च एव स्यादवधारणे ।
प्राक् पूर्वे देशकालादौ प्रत्यक् प्रत्यक्षदर्शने ॥ १९
ईषदर्थे मनाक् सम्यग् निश्चये कं सुखाम्बुयोः ।
अलं भूषणपर्याप्तिवारणेषु निगद्यते ॥ २०
आ स्मृतौ संभ्रमे मोहे कामं स्यादतिशायिनि ।
धिक् तिरस्करणे कच्चित् साधुप्रश्नप्रवृत्तिषु ॥ २१
अन्वगित्यनुगत्यर्थे समाप्ताविति भण्यते ।
प्रश्ने विशेषयोगे च स्वित् संशयविकल्पयोः ॥ २२
युगपदेककालार्थे सातत्यादेश्चिदिष्यते ।
समन्ताद्-विष्वगित्युक्तिर्विभागे पृथगुच्यते ॥ २३
इ प्रहासे इ संबन्धे नु आमन्त्रणतथ्ययोः ।
पितृप्रीतौ तथा स्वाहा तर्पणे जातवेदसः ॥ २४
सहार्थे समया ज्ञेया हंहोऽनिर्दिष्टबोधने ।
संमुखे सत् प्रतिष्ठायां तूष्णीमध्यव्यति(?) क्रमे ॥ २५

---

१ A. आवासन्यो न्यग्(?), B. आमेसान्वा(!) २ B. युः °श्लाघावि°.
३ A. शीघ्रं, B. मञ्जुः ४ A. °थोदये. ५ A. °भव°. ६ A. साम्प्रदाम°(!)
७ A. व्यञ्जने, B. अञ्जसा. ८ B. उन्मुखे च प्रशंसायां.
९ A. कृष्णीमध्यहनि°(?), B. तूष्णीमध्याद्वि°.

प्राहुर्नक्तं रजन्यर्थे दिनार्थे च दिवा दिनम् ।
संज्ञायां नामसत्तायामस्ति साध्येऽभिधीयते ॥ २६
उत्सारणे फडित्याहुर्वषट् वौषट् तु तर्पणे ।
अभि सामीप्यदूरोद्ध्र्वदेशेषु परिकीर्त्त्यते ॥ २७
सामीप्ये समया-शब्दः सामीप्ये निकषोच्यते ।
नानाऽनेकप्रकारार्थे तत्क्षणात्सपदि स्मृतः ॥ २८
चिराच्चिरेण कालस्य प्रकर्षोक्तौ चिराय-वाक् ।
दूराद् दूरेण दूरं च अविकृष्टं च देशकम् ॥ २९
लघु-शब्दोऽपि शीघ्रार्थे दूरोरात्तन्ययान्तिके(?) ।
अङ्गेत्यामन्त्रणे हाहा क्रोधकृत्यनिवारणे ॥ ३०
विकल्पेऽहह हाहेति नं(?) प्रतीते च वर्जने ।
प्रदोषे सायमित्याहुर्बाढमत्यर्थयुक्तयोः ॥ ३१
समं साकं सहार्थे च कल्यं(?) श्वरमनुद्धते ।
पश्चान्न वैरे सत्ये च ध्रुवं कृत्ये च निश्चये ॥ ३२
अभिन्नेषु पुनर्भूयो मध्येऽतः प्रणतो मतः ।
पूजायामति-सु प्रोक्तौ नीचैर्निम्नः शनैर्मनाक् ॥ ३३
प्रकटीकरणे प्रादुराविर्विश्वसितेऽनिशम् ।
बहिर्बाह्ये अधोऽधस्तात् पुरोऽग्रमिङ्गिते द्रुते ॥ ३४
तिरश्चीने तरीत्युक्तिस्तरी सत्यार्थकीर्तने ।
आहि त्वरायामाहीति आक्षेपे आहि कीर्त्यते ॥ ३५
बाहुल्यार्थे स्मृतः प्रायः उच्चैरत्यर्थतुङ्गयोः ।
ह्योऽतीते गते काले ह्यनागते श्वो निगद्यते ॥ ३६
प्रश्ने तर्के च किं प्रोक्तो वरमिष्टप्रशंसने ।
अमाशब्दः सहार्थः स्यान् निषेधे वोभिधीयते ॥ ३७
प्रहासाग्रनयोरोभिः (?) प्रतिपत्तावहा तथा ।
एकत्वेऽर्थे सकृद् विद्यादुत्कर्षे निश्चये परम् ॥ ३८

---

१ B विधीयते. २ B. दूरेवासंतवा°. ३ B. °र्धे°. ४ B. °नश्वर° (?)
५ B कथ्यं. ६ A. अहर्भिन्ने. ७ A. °ते ८ A.B. °का ९ A. °सितम्.
१० B. स्यादिभाव° (?), B. घुन्नोदित° (?) ११ A. वा प्रतीयते.

पूर्वकाछे पुरा प्राहुः प्रात्युर्वे रभसा बकात् ।[1]
नित्यं प्रतिदिनं ज्ञेयं सर्वगार्थे परि-ध्वनिः ॥ ३९
ततो(?)च्चै ज्योतिके द्योते कल्कैनसमुच्यते(?) ।
तथैत्थं स्वयं स्वार्थे हि यस्मांदिति विस्मये ।
कौत्स्ये [च] मृदुरातीक्ष्णे योऽयं कुष्ठो[3] विधीयताम् ॥ ४०

इति शब्दरत्नप्रदीपे[4] पञ्चमो[5] स्तुबक[क]ः समाप्तः ॥

---

१ B मदंभरिक्षियो नैजमेवेत्यमु(?)च्यते । २ B. °द्दविस्मयः स्मृतः ।
३ B. °ष्ठयमिधीयते । ४ B adds श्लोकाधिकारः ५ B. °मः
६ B. काण्डः

Appendix I

Index of Homonyms

	मण्डल	श्लोक
अक्ष	१	७६
अग्र	२	६०
अघस्	३	६
अङ्क	२	१८
अज	३	४
अत्यय	२	१४
अद्रि	३	३
अन्तर	१	३०
अन्ध	३	१८
अभिख्या	२	४
अभिरूप	३	२५
अमृत	२	४१
अम्बर	३	११
अरविन्द	२	८४
अरिष्ट	१	३१
अर्क	३	२१
अर्जुन	१	२७
अर्थ	२	६१
अलीक	३	३१
अवट	३	३०
अवि	२	१०
अष्टापद	१	९०
अहि	१	४५
आजि	२	३९
आडम्बर	२	२४
आत्मन्	२	१२
आलि	२	३८
आशा	३	२५
इडा	२	१६
इन्द्र	१	४४
इला	३	३
उत्पल	२	८०
उदान	३	१२
उद्दान	३	१२
उद्यान	२	६०
उपह्वर	२	२६
एक	२	९
ओघ	३	२
ओजस्	३	२४
क	१	१९
ककुद्	२	१७
कक्षा	२	५
कङ्केरु	२	४६
कण्ठ	३	१४
कदम्ब	१	७४
कन्द	२	५८
कपर्द	२	२४
कबन्ध	२	१८
कमर	३	१८
कमल	१	८७—८८
कम्बल	१	३२
कर	२	५९
करट	२	४५
करण	१	८५
करभ	३	९
करवीर	२	७१
करीर	२	८
कलवात	२	८१
कला	२	४७
कलि	३	१४
कलिङ्ग	२	८८
कल्क	३	११
कल्प	१	६४
	२	११
कशिपु	२	२३
कशेरुक	२	२९
कश्मल	२	२७
काण्ड	१	३९
कान्तार	१	९५
काय	३	५
काव्य	२	७८
काश्य	३	७
काष्ठा	१	६१
किङ्किणी	३	२७ टी
किरि	३	१५
किषि	२	८७
कीकस	२	५४
कीनाश	२	३०

	मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक
कीर	२	२१टी	क्षेत्र	२	८	ज्योति	२	४३
	३	१६	खट्ट	३	१३	तन्त्र	१	३६
कीलाल	१	२२	खर	१	७८	तरस	२	५२
कुण्डल	२	८६	खजूर	१	९६	तल्प	२	३
कुतप	१	१४	खल	२	३६	तात	३	२९
कुथ	१	१३	गन्धर्व	१	८२	ताल	१	६०
कुन्तल	१	३४	गर्त्तु(?)	२	८९	तिलक	१	८१
कुन्त्या	२	४१	गन्धर्व	१	८२	तीक्ष्ण	२	७६
कुरुविन्द	२	७०	गुरु	१	९७	तुरायण	२	६४
कुल	२	३१	गुह्य	३	२२	तुषार	२	४७
कुशल	२	१२	गो	१	१५	तुवर	२	२५
कुशि	२	८७	गोत्र	१	५३	तृष्णा	३	७
कूट	२	१५	गोविन्द	३	४	त्र्यम्बक	२	३४
कृत्य	३	२३	गौरी	१	५	दया	३	१९
कृष्णा	२	८१	घन	१	५४	दर	३	२
	३	२८	घनाघन	२	६	दल	२	३९
केतु	२	२८	घृणा	२	७५	दायाद	२	२०
कैवर्त्त	२	६८	चक्र	१	७७	दाव	३	१०
कोण	१	५९	चन्दन	२	६९	द्विजिह्व	२	५१
कोल	३	१४	चन्द्र	३	१५	दीन	३	२३
कोश	२	६७	चिकुर	३	१०	दीप्ति	३	२७
कौशिक	३	१७	चित्रक	१	६८	दुन्दुभि	२	५९
क्रोड	३	१९	चीवर	३	२८	दुरोदर	२	४३
क्लीब	२	२१ टी	छाया	३	१९	दृष्टि	३	२८
क्षण	१	४२	जाति	१	७९	देव	१	१७
क्षय	३	१३	जामि	३.	२५	द्रुम	३	२०
क्षिति	३	१३	जिन	१	५६	द्रोण	१	७०
क्षुद्र	१	९	जीमूत	३	१०	द्विज	३	३१

	मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक
द्विजराज	२	६८	निस्त्रंस	३	१२	प्रज्ञान	३	२६
धन्वन्	२	१९	नृशंस	२	२५	प्रतिग्रह	१	७३
धर	२	५६	नेत्र	१	३७	प्रतिबन्ध	२	८६
धव	२	३३	प्लक्ष	२	७	प्रतिरोधक	२	७४
धातु	१	३८	पट्ट	१	२८	प्रत्यय	२	१३
धात्री	१	६९	पतङ्ग	३	२१	प्रधान	२	८३
धाम	२	१४	पत्र	२	६७	प्रमाण	२	४४
धावन	२	६३	पद	२	१३	प्रदर	३	९
धिष्ण्य	२	३	पयस्	३	१	प्रवाल	१	५८
धीर	३	२१	पयोधर	३	२५	प्रहि	३	१४
धुन	२	११	पराक्रम	३	२७	प्राजिक	२	९१
धेनु	१	४७	परायण	२	६५	प्राध्व	३	४६
ध्रुव	३	२०	परिघ	२	५५	प्राप्ति	३	२६
ध्वाङ्क्ष	३	१२	पक्ष	२	३८	प्रियक	१	७५
ध्वान	२	७९	पलल	१	२३	प्लवक	३	२७
नग	३	१२	पलाश	१	६२	फण	१	८०
नन्दन	२	६२	पात्र	२	६६	बभ्रु	३	२३
नाग	२	३१	पिप्पल	२	६९	बर्हिस्	३	१५
नाभि	१	५२	पीलु	३	९	बल	१	७२
निज	३	२४	पुण्डरीक	१	८६	बलि	१	२९
निदाघ	२	२८	पुण्य	२	३५	बहुल	२	५७
निमित्त	३	३०	पुरुहूत	२	४०	बाल	१	९१–९२
निर्व्यूह	२	९	पुलाक	२	७	बाष्प	३	८
निवात	२	३०	पुष्कर	१	१८	ब्रह्म	२	३५
निष्क	२	१८	पुष्प	२	३३	भग	१	१६
	२	५८	पूग	२	३२	भङ्ग	२	७५
	३	८	पूर	३	२०	भषक	२	७३
निस्त्रिंश	३	८	प्रकोष्ठ	२	२१	भानु	३	३

	मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक
भाव	१	१२	यज्ञ	३	२८	वर्म	२	१९
भुवन	३	७	योग	१	५०	वर्द्धन	२	२९
भूत	१	८९	रजनी	२	५५	वर्द्धन	२	६१
भूरि	२	७२	रमणी	२	८३	वर्षा	२	१९
भृशुण्डिन्	२	७७	रम्भा	२	४	वल्लव	३	१०
भ्रूण	१	४३	रस	१	५१	वसति	३	५
मघा	२	५०	राजा	३	१	वसु	१	२५
मणि	२	४८	राढा	२	३७	वाज	२	४९
मण्डल	२	३३	राम	१	५५	वाडव	३	७
मत(?)	३	३१	रीढा	२	२७	वारि	२	७१
मत्स्य	३	२९	रुक्म	२	७९	वारुणी	२	५२
मधु	१	८	रुधिर	२	६२	वाल्मीक	२	९०
मधुर	३	२२	रूप	३	२९	वागुरा	२	८०
मन्द	२	४४	रोमन्थ	२	५४	वाह	१	१०
मन्दुरा	२	५२	रोहित	१	७१	वाह्लीक	१	९५ टी
मन्यु	२	५६	लक्ष्मण	२	९२	विग्रह	२	२१
मरुत्	२	८५	ललाम	१	२४	वितान	२	२२
मात्रा	२	१६	लाङ्गल	३	१५	विश्वावसु	३	२६
मानस	२	६३	लीक (!)	३	२७	विष	२	४८
माया	२	८५	वंश	२	६५	वीर	३	१६
मार्गण	२	७६	वत्स	३	१९	वीर्य	२	५०
	३	१७	वधू	२	२३	वृजिन	३	२६
माल्य	२	३७	वन	३	२	वृष	१	४८
मित्र	३	२	वप्र	२	२		३	११
मृणाल	२	७८	वर	३	२१	वृषाकपि	३	४
मृत्यु	२	४२	वर्चस्	३	५	वेला	१	४१
मृदु	३	३०	वर्ण	१	२६	व्यक्त	३	२१
मोचा	२	५	वर्ति	२	८८	व्याड	२	२

	मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक
व्याल	१	४६	श्रम	३	१३	सुधा	१	४०
व्रज	२	४९	श्रोत्र	३	२९	सुमनस्	२	३९
शम्भु	३	२२	सयद्वर	२	८२	सूत	२	७३
शय्या	२	५१	संवर	२	१०	सूद	२	७२
शर्वर	२	८२	संगर	२	४०	सूनृत	२	५३
शलि	१	४९	संज्ञा	३	३	सूर	३	२०
शारद	२	२६		१	२१	सौवीर	२	७४
शाल	३	६	सती	२	२२	स्तोक	३	६
शाला	२	३६	सत्र	१	६३	स्थाणु	३	४
शिखण्ड	२	६६	सद्	२	१७	स्थूल	३	३१
शिखण्डिन्	२	७७	सन्धा	३	५	स्यन्दन	२	६४
शिलीमुख	३	८	समर	३	१८	स्व	२	१५
शिल्प	२	१६टी	समर्थ	३	३०	हंस	१	२०
शिव	१	४	समाज	२	९१	हर	२	१६टी
शुक	१	५७	समिति	१	६६	हरि	१	६–७
शुचि	२	६	संपा	२	४२	हरिण	२	४५
शुभा	१	९४	सरल	२	५७	हायन	३	२४
शृगाल	२	८४	सस्य	२	७०	हार	१	११
शृङ्ग	१	८३	सायक	३	१७	हाव	३	९
शेलु	२	८९	सारंग	१	८४	हीर	३	१६
शैल	२	९०	सित	१	६७	हेति	३	२४
शोण	३	११	सिन्धु	३	६	हेतु	३	१६
श्यामा	१	६टी	सिफा	२	३४			
	१	९२	सीता	१	५१			

Appendix II

Index of Technical Terms

	मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक
अक्लिष्ट	४	३५	आवपन	४	४५	काम्बोज	४	१६
अग्रेदिधिषु	४	४४	आषाढ	४	६५	कात्यायनी	४	७३
अधमर्ण	४	३९	आसार	४	४२	काल्या	४	२०
अध्वर्यु	४	६४	आस्य	४	७५	किशोरक	४	१६
अनय	४	१८	आहोपुरुषिका	४	३१	कुप्य	४	३७
अनामिका	४	२६	इरम्मद	४	४२	कुशीद	४	१८
अनीकस्थ	४	३	इल्वला	४	५९	कुहू	४	६१–६२
अनुमति	४	५९–६०	इष	४	५६	कूकद	४	५३
अनेडमूक	४	५८	इष्टापूर्त	४	६७	कूबर	४	१८
अन्तर्वेश्मिक	४	३	उत्तमर्ण	४	३९	कूर्च	४	७३
अन्वाहार्य	४	६९	उद्गातृ	४	६५	कौमोदकी	४	८१
अपराद्धेषु	४	६	उपत्यका	४	२३	गणरात्रम्	४	५०
अपसर्प	४	११	उपरक्त	४	५३	गव्यूति	४	४८
अपस्कर	४	१८	उपाकृत	४	६८	गुल्फ	४	७४
अभिभय	४	११	उपाध्याय	४	७७–७८	गुल्म	४	१०
अभिषेणक(न)	४	७	ऊर्ज	४	५६	गोकर्ण	४	२७
अरत्नि	४	२८	एकायन	४	५७	ग्रस्त	४	३३
अवकेशिन्	४	४६	एडूक	४	५१	ग्राम्य	४	३६
अवार	४	२३	ओदन	४	७९	चित्रधेनु	४	८३
अश्वकाङ्ग	४	१७	कनिष्ठा	४	२६	चित्रपद	४	३६
असद्ग्राह्य	४	३४	कबन्ध	४	९	चिररात्रम्	४	५०
आचार्य	४	७६–७७	करभ	४	२५	छेक	४	४५
आजानेय	४	१६	कर्मसचिव	४	२	जघन	४	७४
आतोद्य	४	३८	कल्य	४	२९	ज्येष्ठा	४	२६
आधोरण	४	१५	कल्या	४	३५	तण्डुल	४	७८
आलान	४	१३	कव्य	४	७१	तपस्	४	५७

	मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक
तपस्य	४	५७	निरत	४	३३	प्रादेश	४	२७
तारका	४	७३	निषादी	४	१५	प्रावृष्	४	४२
ताल	४	२७	निष्ठुर	४	३४	प्रासाद	४	७५–७६
तैजस	४	४६	नैचिकी	४	१९	प्रियाप्रिया	४	३५
त्रयी	४	६२	पक्व	४	३२	प्रोथ	४	१७
त्रिवर्ग	४	७०	पक्षिणी	४	४९	बभ्रु	४	४०
दण्डनीति	४	६३	पञ्चालिका	४	५२	बाल्हीक	४	१६
दम	४	१०	पद्म	४	१५	ब्रह्मचर्य	४	६८
दर्श	४	६९	पद्या	४	४८	भारतवर्ष	४	५२ टी
दिक्पाल	४	८०	पाञ्चजन्य	४	८१	भृङ्गार	४	४६
दिग्ध	४	१२	पाटल	४	४१	मकरन्द	४	३०
दिधिषू	४	४४	पादबन्धन	४	३७	मद	४	१४
दिव्य	४	७०	पार	४	२३	मधु	४	५४
दीक्षित	४	६६	पिशङ्ग	४	४०	मलिन	४	२४
दीर्घदर्शी	४	१९	पुराण	४	८४	महाधन	४	३०
देवमातृक	४	४३	पुष्ट	४	३२	महोत्साह	४	१२–१३
दैव	४	१८	पोगण्ड	४	५४	माधव	४	५४
द्रप्स	४	२२	प्रकीर्णक	४	२९	मित्र	४	५
धार्तराष्ट्र	४	२४	प्रकोष्ठ	४	२५	मेचक	४	४१
धूम्र	४	४०	प्रणिधि	४	४	यष्टृ	४	६७
धौरित	४	१७	प्रतल	४	२८	रत्न	४	३२
नदीमातृक	४	४३	प्रतिरोध	४	८	रत्नि	४	२८
नन्दक	४	८१	प्रतिसर	४	८	राका	४	५९–६०
नभस्	४	५५	प्रत्यासार	४	७	रूप्य	४	३७
नभस्य	४	५५	प्रदेशिनी	४	२६	वत्सतर	४	२१
नितम्ब	४	७४	प्रष्ठौही	४	२१	वमथु	४	१४
निबन्धन	४	१०	प्राचीनावीतिन्	४	७१	वरारोहा	५	७२
निरर्थक	४	३४	प्राजितृ	४	१५	वरूथ	४	१०

	मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक
वर्षधर	४	५	व्याम	४	२६	सहस्य	४	५६
वषट्	४	६७	व्यूह	४	६	सानु	४	२३
वस्त्र	४	२९	व्रात्य	४	६६	सान्त्व	४	३४
वाग्म	४	३३	शत्रु	४	५	सान्नाय्य	४	६५
वाज	४	६	शब्द	४	८५	सारिक	४	५
वात्या	४	५९	शब्दलोक	४	५१	सित	४	२४
वार्धुषिक्य	४	३९	शाखानगर	४	४७	सुव्रता	४	२०
वार्ता	४	६३	शिनीवाली	४	६०–६१	सृणि	४	१४
विकुल	४	४७	शिवगङ्गा	४	८२	सेनाङ्ग	४	८
विकूणिका	४	३९	शीकर	४	४२	सैरन्ध्री	४	७२
विटप	४	३१	शुक्र	४	५५	सोमप	४	६५
वितस्ति	४	२७	शुक्ति	४	५५	सौध	४	७६
विनीतक	४	१६	शृङ्गिन्	४	३७	स्तबक	४	३०
विषुवत्	४	५८	शोण	४	४१	स्थायुष(क)	४	४
विस्फार	४	९	श्वेत	४	४०	स्मृति	४	६४
वीरपानक	४	९	संसप्तक	४	४८	स्वगत	४	३५
वीरहन्	४	६६	संधि	४	७५	हरित्	४	४१
वीरा	४	७२	संधिनी	४	२१	हव्य	४	७१
वृन्त	४	३१	समामा	४	२०	हिरण्य	४	३६
बृंहित	४	१३	सम्राज्	४	१	हैयङ्गवीन	४	२२
वेश	४	३८	सहस्	४	५६	होतृ	४	६४
वेहत्	४	१९						

Appendix III

Index of Indeclinables

	मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक
अङ्ग	५	३०	उत	५	१०	ध्रुवम्	५	३२
अञ्जसा	५	१८	उरी	५	१५	न	५	८
अतस्	५	१०	ऊररी	५	१५	नक्तम्	५	२५
अति	५	३३	ऊरी	५	१५	न–परम्	५	६
अथ	५	१८	ए	५	१३	नाना	५	२८
अन्तरा	५	११	एव	५	१६–१९	निकषा	५	२८
अन्तरेण	५	११	कच्चित्	५	२१	नित्यम्	५	३९
अन्वक्	५	२२	कम्	५	२०	नीचैस्	५	३३
अपि	५	७	किम्	५	३७	नु	५	९
अभि	५	२७	किमुत	५	९		५	१३
अमा	५	३७	किल	५	७		५	२४
अयि	५	१२–१६	खलु	५	१७	परम्	५	५
अरे	५	१३	च	५	२	परि	५	३९
अलम्	५	२०	चिरात्	५	२९	पश्चात्	५	३२
अस्ति	५	२६	चिराय	५	२९	पुनर्	५	१०–११
अहह	५	३१	चिरेण	५	२९	पुरस्	५	३४
अहो	५	५	चेत्	५	२३	पुरा	५	३९
आ	५	२१	जातु	५	१६	प्रगे	५	११
आम्	५	८	ततस्	५	१०	प्रत्यक्	५	१९
आविस्	५	३४	तरी	५	३५	प्राक्	५	१९
आहि	५	३५	तूष्णीम्	५	२५	प्रादुर्	५	३४
आहोस्वित्	५	१६	दिवा	५	२५	प्रायस्	५	३६
इ	५	२४	दूरम्	५	३९	फट्	५	२७
इति	५	९	दूरात्	५	३९	बत	५	६
इव	५	९	दूरेण	५	३९	बहिस्	५	३४
उच्चैस्	५	३६	धिक्	५	२१	बाढम्	५	३१

	मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक		मण्डल	श्लोक
भूयस्	५	३३	वा	५	३	सुष्ठु	५	११
मङ्क्षु	५	१५	विष्वञ्च्	५	२३	स्वयम्	५	४०
मध्ये	५	३३	वै	५	१५	स्वाहा	५	२४
मनाक्	५	२०	वौषट्	५	२७	स्वित्	५	२२
मा	५	१७	सकृत्	५	३८	हन्त	५	४
मा स्म	५	८	सपदि	५	२८	हा	५	४
मिथस्	५	१०	समम्	५	३२		५	१३
मुधा	५	११	समया	५	२४–२८	हाहा	५	३०–३१
युगपत्	५	४३	सम्यञ्च्	५	२०	हि	५	४
रभसा	५	३९	साकम्	५	३२		५	४०
लघु	५	३०	सायम्	५	३१	हे	५	१३
वरम्	५	३७	सु	५	३३	ह्यस्	५	३६

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रकाशित ग्रन्थ

१ प्रमाणमञ्जरी – तार्किकचूड़ामणि सर्वदेव। २ यन्त्रराजरचना – महाराजाधिराज जयसिंहदेव कारिता। ३ कान्हडदे प्रबन्ध – महाकवि पद्मनाभ। ४ क्यामखांरासा – नवाब अलफखां (कविवर जान)। ५ लावारासा – चारण कविया गोपालदान। ६ महर्षिकुलवैभवम् – विद्यावाचस्पति स्व. श्री मधुसूदनजी ओझा। ७ वृत्तिदीपिका – मौनि कृष्णभट्ट। ८ राजविनोद काव्य – कवि उदयराज। ९ तर्कसंग्रहफक्किका – क्षमाकल्याणगणी। १० वृत्तसंग्रह – अज्ञातकर्तृक। ११ शृंगारहारावलि – हर्षकवि। १२ कृष्णगीति – कवि सोमनाथ। १३ कारकसंबन्धोद्योत – पं. रभसनन्दी। १४ शब्दरत्नप्रदीप – अज्ञातकर्तृक।

प्रेस में

१ त्रिपुराभारतीलघुस्तव – सिद्धसारस्वत [illegible] व्याकरण – ठक्कुर संग्रामसिंह। ३ करुणामृतप्रपा – मह[illegible] ४ पदार्थरत्नमञ्जूषा – पं. कृष्णमिश्र। ५ शकुनप्रदीप – [illegible] रत्नाकर – पं. साधुसुन्दर गणी। ७ प्राकृतानन्द – [illegible] विलासकाव्य – पं. कृष्णभट्ट। ९ चक्रपाणिविजयकाव्य – [illegible]। १० काव्यप्रकाश – भट्ट सोमेश्वर। ११ नृत्यरत्न कोश – महाराजाधिराज कुंभकर्णदेव। १२ नन्दोपाख्यान – अज्ञातकर्तृक। १३ चान्द्रव्याकरण – चन्द्रगोमी। १४ रत्नकोश – अज्ञातकर्तृक। १५ कविकौस्तुभ – पं. रघुनाथ मनोहर। १६ एकाक्षरकोशसंग्रह – विविधकविकर्तृक। १७ शतकत्रयम् – भर्तृहरि, धनसारकृत व्याख्यायुक्त। १८ वसन्तविलास – अज्ञातकर्तृक। १९ दुर्गापुष्पाञ्जलि – म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी। २० दशकण्ठवधम् – म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी। २१ गोरा बादल पदमिणी चऊपइ – कवि हेमरतन। २२ बांकीदासरी ख्यात – महाकवि बांकीदास। २३ मुंहता नैणसीरी ख्यात – मुंहता नेणसी इत्यादि।

प्राप्तिस्थान – सञ्चालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर।